स्वामिनारायण प्रकाश

सदस्यता शुल्क रु. 60/-
फरवरी, 2022

दलितों और पिछड़े वर्गों के प्रिय वात्सल्यमूर्ति संत

प्रमुखस्वामी महाराज

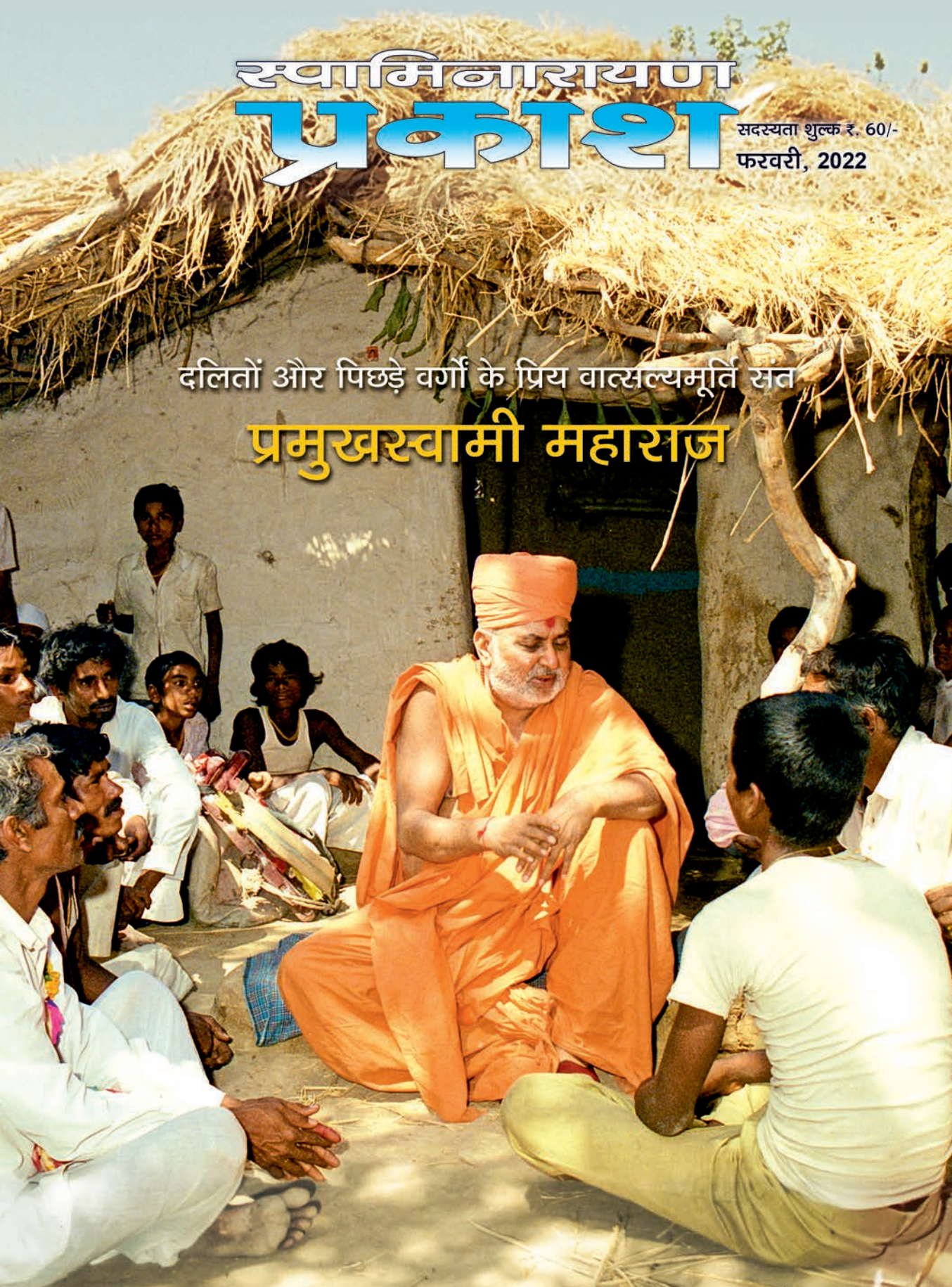

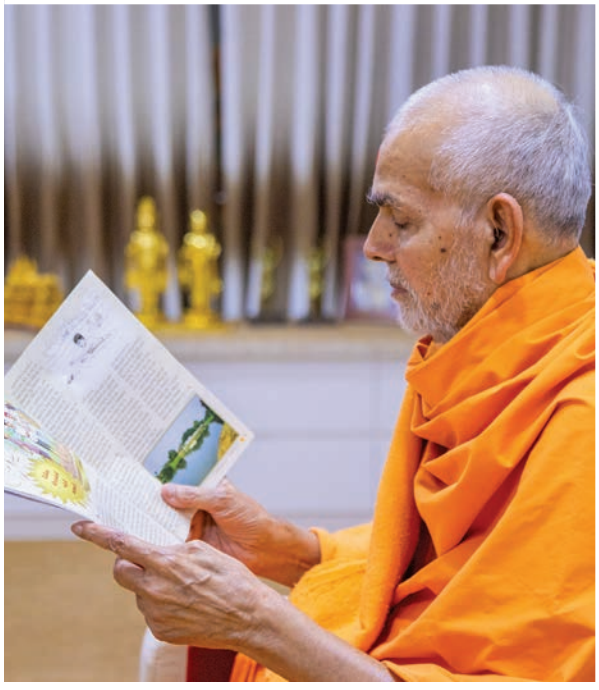

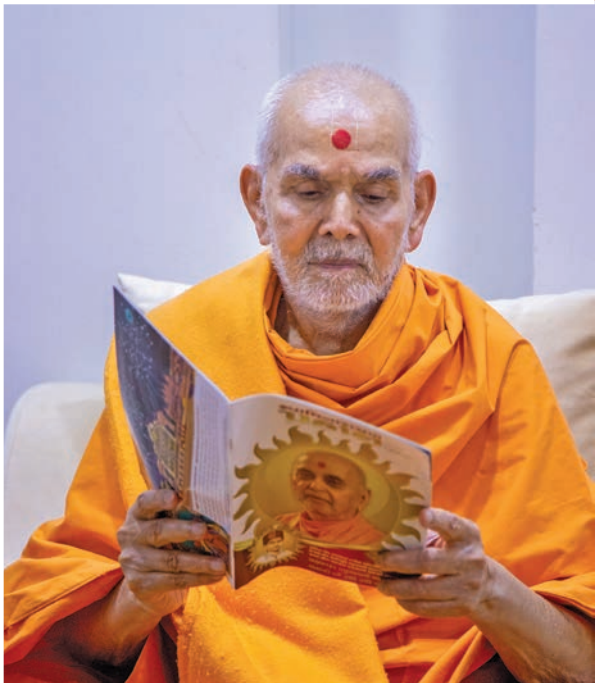

पराभक्ति अचल है अंग, सद्वाचन का नित्य जगन... यह पंक्ति परम पूज्य महंत स्वामी महाराज के जीवन में आसानी से देखी जा सकती है। सत्संग और विभिन्न समाज सेवा की गतिविधियों के बीच भी, स्वामीजी स्वयं को भगवान को समर्पित कर रहे हैं, सभी के कल्याण के लिए निरंतर प्रार्थना कर रहे हैं। स्वामीजी ने गणतंत्र दिवस पर श्रीअक्षरपुरुषोत्तम महाराज से लाखों हरिभक्तों, समाज, राष्ट्र और दुनिया की भलाई के लिए प्रार्थना की। शास्त्रों का निरंतर पठन-ध्यान-अभ्यास भी स्वामीजी की भक्ति का एक प्रमुख पहलू है। समय की व्यस्तता के बीच भी, स्वामीजी स्वामिनारायण अक्षरपीठ द्वारा प्रकाशित प्रकाशनों के साथ-साथ मासिकी पत्रिका 'स्वामिनारायण प्रकाश' को नियमित रूप से पढ़ते हैं। पिछले महीने के 'स्वामिनारायण प्रकाश' का पाठ करके, गुरुहरि प्रमुखस्वामी महाराज के दिव्य गुणों का स्मरण करते हुए, स्वामीजी की यादगार स्मृति छवि ...

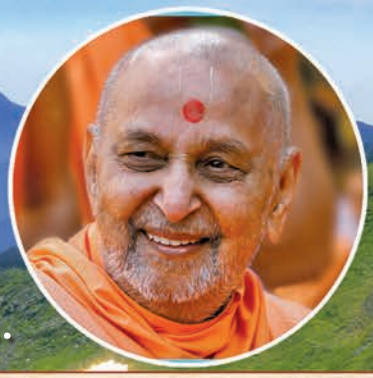

समानता की रीढ़ और ममता के माली प्रमुखस्वामीजी महाराज...

सनातन हिंदू धर्म सद्भाव का धर्म रहा है। इसमें विशालता और गहराई दोनों हैं। भावनाओं की विशालता और समझ की गहराई। यह धर्म जीवों के प्रति घनिष्ठता यानी आत्मा की विशालता को विकसित करना सिखाता है। दूसरी ओर मनुष्य के हृदय में ही ईश्वर को देखकर आत्मा की दृष्टि से देखने की समझ भी सिखाता है। पौधों और गूंगे जानवरों के प्रति स्नेह और दया सिखानेवाला यह धर्म अन्य मनुष्यों के प्रति भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण कैसे सिखाए? यही कारण है कि वसुधैव कुटुम्बकम् की विशाल भावना यहां सहज रूप से सिंचित है। हालाँकि, गुणों और कर्मों की विविधता के कारण, मनुष्य के बीच भेदभाव उत्पन्न होता है। दुनिया में ऐसी कोई संस्कृति नहीं है जहां इस तरह का भेदभाव न हो। लेकिन सनातन हिंदू धर्म ने भेदभाव के बीच अभेद की दृष्टि सिखाई है।

विद्या की शिक्षा देनेवाला और ज्ञान देनेवाला वर्ग ब्राह्मण है। स्वयं का त्याग कर दूसरों की रक्षा करनेवाला वर्ग क्षत्रिय है। वैश्य जो मेहनत से अनाज उगाते हैं और जो छोटी-बड़ी चीजें बेचकर सबको बांटते हैं। और जो सबकी सेवा करता है वह शूद्र है। और इन सभी वर्गों को भगवान के दिव्य शरीर का हिस्सा माना जाता था। इसका एक स्पष्ट संकेत ऋग्वेद के पुरुषसूक्त में मिलता है, जो ब्रह्मणोऽस्य मुखमासिद्... गाता है।

ऐसी सामाजिक व्यवस्था ऋग्वेद के समय में मौजूद थी। एक व्यापक मान्यता थी कि कोई भी व्यक्ति महान पैदा नहीं होता और न ही कोई भी हीन पैदा होता है। भगवद् गीता के अनुसार, एक व्यक्ति को उसके कर्म और उसके गुणों के कारण उच्च या निम्न माना जाता था।

लेकिन समय के साथ, परिस्थिति में बदलाव आया है। शास्त्रों की व्याख्या विकृत कर दी गई। शास्त्रों में कहीं-कहीं बीच में आनेवाले भागों को जोड़ा गया। परिणामस्वरूप मनुष्य मनुष्य के प्रति अपने दृष्टिकोण में निष्क्रिय हो गया। इसलिए जन्म के कारण ऊंच-नीच का भेद आ गया। इस पतन के कारण समाज में वैमनस्य उत्पन्न हो गया। इसने विदेशी शासन को भी हवा दी। वर्ग संघर्ष से उन्हें और धर्मांतरण को लाभ हुआ। नतीजतन, स्थिति और खराब हो गई।

सैकड़ों साल की इस स्थिति के खिलाफ 21 साल के एक युवक भगवान स्वामिनारायण ने आवाज उठाई। उन्होंने सनातन हिंदू धर्म की वैदिक आध्यात्मिक दृष्टि को दोहराया : आत्मा के दृष्टिकोण से सभी को देखें। देह का भेद शरीर तक ही सीमित है।

गढ़डा प्रथम के 44वें वचनमृत में, उन्होंने स्पष्ट किया कि इस जीव को शरीर का चोला कभी ब्राह्मण और ब्राह्मणी द्वारा निर्मित होता है और कभी-कभी उस जाति द्वारा, जिसे नीच माना जाता है। इसको जो सत्य मानकर विश्वास करता है उसे मूर्ख कहा जाता है। और उसे जानवर के रूप में जानना चाहिए... जब तक वह शरीर को अपना रूप मानता है, तब तक उसकी सभी समझ बेकार है। भगवान स्वामिनारायण ने लाखों लोगों में यह समझ पैदा की, इतना ही नहीं, वे स्वयं एक ब्राह्मण कुल में पैदा हुए थे और अपने जीवनकाल में लाखों लोगों द्वारा पूजे जानेवाले एक दिव्य होने के बावजूद, दलितों की झोपड़ियों में गए, उनकी देखभाल की, उन पर अपार आशीर्वाद बरसाया, उनके साथ भोजन किया, और उन्हें महान की पंक्ति में रखा।

यह एक क्रांति थी। शांत क्रांति। ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामीजी महाराज ने जिसके प्रकाश का बहुत विस्तार किया। गाँव से गाँव, हरिजनवास, बुनकरवास, देवीपुजकवास, भंगीवास या आदिवासी की झोपड़ियों में वे गए। वे कठिनाई से उनके इलाकों में पहुंचे। जिन्हें समाज ने त्याग दिया था, उन्हें स्वामीजी ने गोद में लिया, निःस्वार्थ दया की वर्षा की, उनके उत्थान के लिए अपार प्रयास किए। उन्होंने समय-समय पर लघुता ग्रंथि और गुरुत्व ग्रंथियों तथा पूर्वाग्रहों को तोड़ने की सहज सेवा की।

स्वामीजी एकबार सारंगपुर में थे। उसके

चारों ओर, युवाओं का एक समूह उनके अमृत वचनों का पान कर रहा था। उसी समय, स्वामीजी ने देखा कि कुछ युवक कुछ दूरी पर खड़े हैं। स्वामीजी ने प्यार से पुकारा : यहाँ आओ! तुम इतनी दूर क्यों खड़े हो?

चार-पांच युवक आश्चर्य से एक-दूसरे को देखने लगे। कौन बुला रहा है!? सबके मन में एक सवाल था। वहाँ फिर से मधुर स्वर सुनाई दिया -

'आप सब आ जाओ।'

कुछ शर्मिंदगी और कुछ झिझक के साथ, युवक बोला : 'लेकिन स्वामीजी! हम हरिजन हैं!'

स्वामीजी ने करुणामय स्वर में कहा कि तो हम भी हरि के जन हैं... करीब आओ!

दौड़ते हुए युवक स्वामीजी के पास पहुंचे। स्वामीजी ने उनके सिर पर एक प्यारभरा अभय हाथ रखा। सभी के रोम रोम में खुशी का ठिकाना नहीं था। भैया! हरि का जन सबको होना है। कुछ भी नशे की लत है? जीवन को शुद्ध करो। बुरी आदत हो तो छोड़ो। व्यसन के बिना पवित्र जीवन जिओ। लीजिए आशीर्वाद... ।

तत्पश्चात् स्वामीजी ने उन पर बहुत प्रेम बरसाया। उन्हें कृतार्थ बनाया। यह गांव के हरिजनों के लिए एक दिव्य अनुभव था - किसी संत का नहीं, बल्कि संत में वास्तविक भगवान का। और उन उजड़े चेहरों पर उजाला छा गया, हीन भावना पिघल गई, आनंद की लहर उठी। हृदय में जोर से स्वर उठने लगा कि हम भी हरि के लोग हैं, हमें गर्व है, हमारी भी ऊंचाई है... ।

एकबार स्वामीजी अहमदाबाद में ठहरे हुए थे।

वे 26-11-1993 को प्रथम पूजा करने के बाद निज निवास जा रहे थे। दोनों ओर स्वयंसेवकों की कतार लगी थी। स्वामीजी की नज़र कूड़ेदान के पास हाथ में झाड़ू लिए दूर कोने में खड़े हरिजन बंधु रामजीभाई पर पड़ी। स्वामीजी ने उन्हें निकट बुलाया। लेकिन वे हिचकिचाते रहे। स्वामीजी भ्रमित हो गए और अपने आप को उस कोने की ओर खींच लिया। रामजीभाई अभी भी हाथ जोड़े खड़े थे। स्वामीजी ने अपना धन्य हाथ उनके सिर पर रखा। वे झुके और स्वामीजी ने फिर से उनके कंधों पर आशीर्वाद रखा। फिर प्रेम की वर्षा करते हुए उन्होंने कहा कि क्या आप सेवा करते हैं! सही से करो। आपको खुशी होगी।

इससे पहले भी स्वामीजी ने रामजीभाई को व्यसन से मुक्त किया था और बच्चों को पढ़ाई के लिए निर्देशित किया था। स्वामीजी के इस नि:स्वार्थ वर्षा से रामजीभाई की आंखें नम हो गईं।

दक्षिण गुजरात के देदवासन गांव के एक पिछड़े भक्त श्री दलूभाई मदारी से स्वामीजी की मुलाकात जिस तरह से हुई थी, उसे दलूभाई जीवन भर नहीं भूल सके।

संतों के सामने शराब, मांस, हिंसा, चोरी को छोड़कर वे पवित्र जीवन के पथ पर चल पड़े थे। इसलिए वे चाहते थे कि स्वामीजी मेरे घर आएं और मुझे पवित्र करें। उनकी प्रार्थना स्वामीजी के पास पहुँची।

लेकिन उस पूरी तरह से पिछड़े गांव तक पहुंचने के रास्ते में भी पर्याप्त सुविधाएं नहीं थीं। उसमें भी बारिश बहुत हुई। फिर भी स्वामीजी वहाँ चलने लगे। घर-घर चलते हुए कीचड़ रोंदते हुए स्वामीजी से संतों ने कहा कि बापा! अब आप रहने दो। आपको यहाँ बहुत परेशानी है।

स्वामीजी ने कहा कि यहां ये हरिभक्त ऐसी विकट स्थिति में रहते हैं। और यदि तुम सब साधु-संत भी मच्छर, मुषक, पिस्सू के बीच रहते हों, खाने-पीने की परेशानी में इधर-उधर जाते हो, तो मैं क्यों एतराज करूं?

इतनी मुश्किल से जब स्वामीजी ने दलूभाई के घर में पांव रखा तो वे खुशी से झूम उठे। लेकिन साथ ही स्वामीजी

॥ श्री स्वामिनारायणो विजयते ॥

गुणातीतोऽक्षरं ब्रह्म भगवान् पुरुषोत्तमः।
जनो जानन्निदं सत्यं, मुच्यते भवबन्धनात्॥

स्वामिनारायण प्रकाश

वर्ष : 40, अंक : 2, फरवरी, 2022

संस्थापक : ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामीजी महाराज

सम्पादक : साधु स्वयंप्रकाशदास

प्रकाशक : स्वामिनारायण अक्षरपीठ, शाहीबाग, अहमदाबाद - 380004.

यह पत्रिका प्रतिमास 10 दिनांक को प्रकाशित होती है।

शुल्क : वार्षिक सदस्यता शुल्क : रू. 60/-
यह पत्रिका नियमित रूप से डाक द्वारा प्राप्त करने के लिए शुल्क मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट 'स्वामिनारायण अक्षरपीठ' के पक्ष में प्रकाशक के पते पर भेजें। किसी भी मास में सदस्य बन सकते हैं।

सम्पादन विषयक पत्रव्यवहार :
prakash@in.baps.org
'प्रकाश-पत्रिका' संपादन कार्यालय, स्वामिनारायण अक्षरपीठ, अहमदाबाद - 380004.

सदस्यता विषयक पत्रव्यवहार:
magazines@in.baps.org
'प्रकाश-पत्रिका' सदस्यता कार्यालय, स्वामिनारायण अक्षरपीठ, अहमदाबाद - 380004.

website :
www.baps.org
magazines.baps.org

को उस अंधेरी कुटिया में कहाँ बैठाया जाए, यह दुविधा उनके चेहरे पर उठ रही थी, क्योंकि उस घर को घर कहें या कौवे का घोंसला? उसका स्वरूप ऐसा था। अंत में मवेशी का पट्टा साफ करने के बाद चरनी की शिफ्ट पर स्वामीजी का आसन बना दिया गया। भैंस को बांधने की कील की टेढ़ी लकड़ी पर पत्थर रखकर उस पर संतों को बैठाया। स्वामीजी ने प्यार से दलूभाई को आशीर्वाद दिया और अपने आसन से उठकर उन्हें गले से लगा लिया। स्वामीजी करुणामय स्वर में बोल रहे थे कि इसे पिछड़ा कौन कहता है? सत्संग हुआ, पवित्र हुआ, ऐसे घर को तीर्थ कहते हैं। ऐसे घरों और झोंपड़ियों में उनकी भक्ति देखी जाती है।

प्रेम की इस बारिश में भीगे लाखों लोग आज हृदय के भाव से स्वामीजी की जन्मशती पर उन्हें याद कर रहे हैं। इसी परंपरा को परम पूज्य महंतस्वामीजी महाराज निभा रहे हैं। हाल ही में स्वामीजी की शताब्दी पर उनके द्वारा लिखे गए सत्संगदीक्षा ग्रंथ में इसकी गूंज स्पष्ट रूप से महसूस होती है। उसमें लिखा कि सभी जाति के सभी स्त्री और पुरुष हमेशा सत्संग, धर्मशास्त्र और मोक्ष के हकदार हैं। जाति के आधार पर कभी किसी को न्यूनाधिक मत समझो। सभी लोगों को चाहिए कि वे अपनी जाति का सम्मान छोड़ दें और एक दूसरे की सेवा करें। जाति से कोई भी महान नहीं है और कोई भी व्यक्ति न्यून नहीं है। (14-16)

स्वामीजी के दिव्य जीवन के इस पहलू को नमन करते हुए स्वामिनारायण प्रकाश का यह अंक आपके सामने प्रस्तुत है। इस अंक में हम दलितों के जीवन प्रसंगों का आनंद लेंगे।

अगले अंक तक

जय स्वामिनारायण!

– साधु अक्षरवत्सलदास ◆

(पृष्ठ 7 का शेषांश)

रुपये खर्च किए जाते हैं, लेकिन यह देश के विकास के लिए है। और भी कई तरह से खर्च किया जाता है। शादी में अनर्गल खर्च करते हैं। फिल्म-नशेड़ी की लागत का कोई सवाल ही नहीं है। इस पर लाखों रुपयों का खर्च नहीं दिखता और लोगों के मन में मंदिर बनने को लेकर सवाल उठता है।

मंदिरों से संस्कार प्राप्त होते हैं। लोग सभ्य होंगे तो समाज में शांति होगी। व्यसन जुआ सब हानिकारक हैं, है न? कानून होने के बावजूद भी यह काम करते हैं। लेकिन जितना अच्छा मिला, उतना अच्छा। ऐसे मंदिर हों और साधु-संत विचरण करते हों तो मनुष्य के व्यसनों का त्याग करवाते हैं और धर्म के मार्ग पर चलाते हैं तो अच्छा ही है।

संत समाज के अंग हैं। कुछ लोग तो विश्वास भी नहीं करते। साधु गलत हैं, साधुसंस्था को बंद कर देना चाहिए - वे आलोचना करते हैं। लेकिन कुछ शिक्षक अच्छे नहीं होते तो सभी शिक्षक बुरे होते हैं क्या? ऐसे पांच या दस लोगों के होने का मतलब यह नहीं है कि दुनिया से शिक्षा बंद कर दी जाए। डॉक्टरों में, अधिकारियों में, मंत्रियों में भी कुछ ढीलापन है। इसलिए कोई अस्पताल या सरकारी व्यवस्था को बंद नहीं करते।

ठीक वैसे किसी मंदिर या मठ में दो या चार जगहों पर कुछ गलत देखा जाए, तो कहते हैं कि सबकुछ गलत है, इसकी कोई जरूरत ही नहीं है। परन्तु भैया! धर्म-मंदिर-देवता-संत गलत नहीं हैं। इसकी जरूरत है। यदि गाँव में दो-चार दंगे हों, यदि नशा है और यदि एक-दो नशेडी लोगों को परेशान कर रहा है, तो क्या पूरा गाँव गलत हो गया? और गाँव को जला देगा? लोग बिना सोचे समझे बोलते हैं। जब कुछ भी होता है तो सीधे मंदिरों पर भूस्खलन होता है। अगर हम सब हिंदू हैं तो हमें सोचना चाहिए!

लोग धर्म की गहराई में नहीं जाते। ऊपर ऊपर सुनकर सबकुछ निर्धारित करता है। मंदिर-संत-ग्रंथ सभी अंग परोपकार के लिए हैं, लेकिन कुछ कहते हैं कि सबकुछ गलत है, गलत है! ऐसा जो बोलता है, उसके पास करने के लिए कुछ नहीं है, किसी मंदिर को एक पैसा नहीं देना है और कहना है कि धर्म गलत है। भैया! कोई बात नहीं अगर आप कुछ नहीं करते हैं, लेकिन बुरा मत बोलो, उसमें भी आपकी कितनी बड़ी सेवा है!

किसी की निंदा मत करो। आप सामने देखते हैं। खुद को देखेंगे तो आगे बढ़ पाएंगे, लेकिन दूसरों को देखेंगे तो लड़ाई-झगड़े होंगे और विकास नहीं होगा।

धर्म के नियमों और विनियमों का पालन करके जीवन को धन्य कर सकते हैं। जनहित और आत्मकल्याण करने के लिए यह मानव शरीर है।

प्रार्थना करें कि सभी अपने-अपने धर्म के अनुसार जिएं, सभी भेदभाव भूलकर एक-दूसरे का सम्मान करें, एक-दूसरे के धर्म का सम्मान करें। आइए, हम आत्मा-परमात्मा के ज्ञान को मजबूत करके समाज की सेवा करें और समाज और राष्ट्र में शांति हो ऐसी प्रार्थना करें।

(दिनांक 5-6-2005, जूनागढ़) ◆

शताब्दी स्मृति

प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी महोत्सव

ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज के शताब्दी वर्ष में उनके प्रेरक संस्मरण...

कृपा करके मेरे मंदिर पधारे...

फरवरी महीने के सबसे ठंडे दिन गुजर रहे थे। स्वामीजी ने 19 दिनों में वडोदरा, भरूच और पंचमहल जिले के 67 गांवों का दौरा किया। उस समय वे घर-घर घूम रहे थे और दोपहर एक बजे जरडका पहुंचे। लेकिन स्वामीजी के आते ही ढोल बाजे बजने लगे। शोभायात्रा के बाद शाम चार बजे स्वामीजी सभा करके घर-घर पधरावनी करने के लिए निकल पड़े। सभी ग्रामीण अपने घर में स्वामीजी का अभिवादन करने के लिए उत्सुक थे। लगातार 60 पधरावनियां हुईं।

इनमें से अधिकांश मिट्टी-ईंट के घरों में शरीर को मोड़ कर प्रवेश करना पड़ता था। फिर भी स्वामीजी सभी के घर गए। पिछले घर में ताला लगा हुआ था, इसलिए वे उसके बरामदे में गए और फूल छिड़के और गृहस्थों के लिए कल्याण का द्वार खोल दिया।

इन समारोहों के दौरान स्वामीजी ने अपने साथ आनेवाले कार्यकर्ताओं से पूछा, 'ये लोग खेती में क्या पकाते हैं?'

'कपास, मूंगफली, आदि।'

'मिर्च पैदा करे तो ना होती?' एक नया विचार रखते हुए स्वामीजी ने कहा।

'हमने ऐसा कभी नहीं किया।'

'करो, महाराज अच्छा करेंगे।' स्वामीजी के वचन पर विश्वास करते हुए, सत्संगियों ने मिर्च की खेती शुरू कर दी, और एक-एक बीघा पर लगभग रु. सवा लाख की मिर्च पकी। जैसे-जैसे उनके दिन-प्रतिदिन के जीवन में सुधार हुआ, कच्चे घर पक्के लगाए गए। स्वामीजी के लिए पूरा गांव हमेशा ऋणी बना रहा। हर कोई स्वामीजी के लिए क्यों नहीं तरसता, जिन्होंने मोक्ष के साथ अपने व्यवहार को भी सुधार दिया!

स्वामीजी, जो देर शाम जरडका से निकल रहे थे, मणिपुर पहुंचने ही वाले थे, इस यात्रा के बीच में ही देरोल के शंकरभाई ने उन्हें अपने घर आमंत्रित किया। यह स्वीकार करते हुए स्वामीजी ने उन्हें गांव के दूसरी ओर खड़े होने को कहा। तो यह बूढ़ा समय पर स्वामीजी की प्रतीक्षा करने लगा।

लेकिन समय की कमी के कारण प्रबंधकों ने डेरोल का कार्यक्रम स्थगित कर दिया और सीधे मणिपुर पहुंचने की व्यवस्था की। इस समय स्वामीजी कुछ नहीं बोले और मणिपुर की तख्ती को ध्यान में रखते हुए कारवां सीधे समा गाँव से चल दिया। वे बूढे हरिभक्त भी जो उस समय स्वामीजी की प्रतीक्षा कर रहे थे, दो घंटे प्रतीक्षा करने के बाद यह सोच कर घर चले गए, कि अब स्वामीजी नहीं आएंगे। तो अब देरोल में पदरावनी की संभावना शून्य हो गई। लेकिन देरोल आते ही स्वामीजी की आंखें किसी को खोजने लगीं। वह उस हरिभक्त को ढूंढ रही थी जो अभी घर पहुंच गया था।

लेकिन देरोल गांव पहुंचते ही जीप दुर्घटनाग्रस्त हो गई। इसे तत्काल ठीक किया जाना था। रात होते ही सिवान का गैरेज बंद हो गया। लेकिन जांच में एक मैकेनिक शामिल था। जब गाड़ी और संघ वहाँ पहुँचे तो पता चला कि यह कारीगर उसी हरिभक्त का भतीजा था जिसने उन्हें देरोल आने के लिए आमंत्रित किया था और बगल में ही उस हरिभक्त का घर था! इसलिए स्वामीजी उनके घर पर तब तक रहे जब तक कार की मरम्मत नहीं हुई। बेचारा हरिभक्त पागल हो गया। स्वामीजी ने यहाँ आरती-अष्टक गाया था। जहां थोडी देर भी नहीं रुकना था, वहां तेईस मिनट का ठहरना पड़ा! उस समय इस गांव के कार्यक्रम को रद्द करते हुए प्रबंधकों को स्वामीजी के मौन का सार समझ में आ गया था। स्वामीजी किसी भी तरह से भक्तों के भावों को पूरा कर देते हैं - वह रहस्य भी खुल गया। ◆

शताब्दी उपदेश

ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज के शताब्दी वर्ष में उनके प्रेरक उपदेश...

फर्क मनुष्य की बुद्धि में है, धर्म में नहीं...

ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज हल्के-फुल्के अंदाज और सरल शब्दों में उपदेश दिया करते थे। यहां उनके सीधे, सरल प्रसादी भाषण का सारांश दिया गया है। आइए, स्वामीजी की शताब्दी की पूर्व संध्या पर शताब्दी प्रकाश-माला में उनका यह अमृत पीकर अमर हो जाएं...

आजकल बहुतों की समझ ऐसी है कि समाज में सवाल उठते हैं। मैंने सुना है कि धर्म को लेकर झगड़े होते हैं, लेकिन अगर हर इंसान अपने शास्त्रों को समझे तो कोई सवाल ही पैदा नहीं होता। अगर हर कोई अपने धर्म में आस्था रखता है और इस तरह पूजा करता है तो क्या किसी को कोई आपत्ति है? लेकिन मेरा धर्म बड़ा है और तुम्हारा छोटा है, ऐसा मान ले तो संघर्ष होता है।

स्वामिनारायण भगवान ने किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं किया। भेद हमारी बुद्धि में है। भगवान श्रीजीमहाराज ने शिक्षापत्री में लिखा है कि **धर्मो ज्ञेयः सदाचारः** सभी को सदाचार के धर्म में चलना है, तभी उसे पुरुष कहा जाता है। जानवर तो बहन-बेटी को भी नहीं जानते, इसलिए वह जानवर है। यदि सत्य, दया, अहिंसा, ब्रह्मचर्य आदि गुण हों तो वह पुरुष कहलाता है। किसी भी जीव की हिंसा नहीं करनी चाहिए- यही हमारा हिंदू धर्म बताता है। सभी जीवों पर दया करो, उन सभी पर दया करो जिनके पास परिवार है। पूरी श्रद्धा से भगवान की आराधना करें। उनकी आज्ञाओं का पालन करो। सबका सम्मान करो। आप जिस पर विश्वास करते हैं उसके आज्ञाकारी बनो।

भारत हमेशा से धर्म में विश्वास करता रहा है। धर्म का आधार है: शास्त्र, संत और मंदिर। धर्म-मंदिरों में आस्था न रखनेवाला कोई भी व्यक्ति यह सोच सकता है कि इन मंदिरों का निर्माण करना और मूर्तियाँ स्थापित करने की कोई आवश्यकता नहीं है। लेकिन जिस तरह समाज को स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, सभी सुविधाओं की जरूरत है, देश की रक्षा के लिए सेना की जरूरत है, ठीक वैसे ही भगवान में आस्था रखनेवालों को पूजा स्थल की आवश्यकता होती है। आस्था रखनेवाले मंदिर करते हैं, मस्जिद करते हैं, चर्च करते हैं, गुरुद्वारे करते हैं, माता-महादेव के मंदिर करते हैं। इसका निषेध करनेवाला गलत कहता है, क्योंकि उसे धर्म की समझ ही नहीं है। मंदिर तो समाज का अंग हैं।

कुछ लोग पूछते हैं कि आप मूर्तियों की पूजा क्यों करते हैं? तुम सब मूर्ति पूजक हो! लेकिन पूरी दुनिया मूर्तियों की पूजा करती है। ईसाई धर्म चर्च में क्रॉस रखते हैं। क्यों रखते हैं? इन लोगों का मानना है कि यीशु इस क्रूस पर चढ़े थे, इसलिए इसमें यीशु दिखाई देते हैं। मुस्लिम धर्म में भी पश्चिम दिशा में नमाज़ क्यों पढ़ी जाती है? क्योंकि काबा का एक पत्थर है। उसमें उनका विश्वास है। उनका मानना है कि अल्लाह है। ठीक वैसे हमारी हिंदुओं की मूर्ति में आस्था है। मूर्तियों को औपचारिक रूप से सम्मानित किया जाता है। हम अनादि काल से मानते हैं कि मूर्ति पूजनीय है और उसमें भगवान का वास है। जिसे इसमें विश्वास है उसका काम भी पूरा होता है।

कुछ लोग कहते हैं कि मंदिर के बिना भगवान की पूजा नहीं की जा सकती है क्या? लेकिन समाज में संसद और विधायिका की क्या जरूरत है? पेड़ के नीचे नहीं बैठ सकते? यदि इसके लिए उचित स्थान होना है तो काम किया जाता है। ठीक वैसे भक्ति के लिए मंदिर होना चाहिए। कुछ लोगों को मंदिर बनाना महंगा पड़ता है। देश के कई सम्मेलनों में लाखों

(शेषांश पृष्ठ 5 पर)

शताब्दी अनुभूति

प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी महोत्सव

ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज के शताब्दी वर्ष में उनके प्रेरक अनुभव...

प्रभुता के दर्शन, करुणामूर्ति संत

टोनी ब्लेयर
(पूर्व प्रधानमंत्री, इंग्लैंड)

मैंने इंग्लैंड में शांति के धाम स्वामिनारायण मंदिर में प्रमुखस्वामी महाराज के दर्शन किए उसे अपना सौभाग्य मानता हूं। मुझे उनमें अपार विनम्रता, दिव्यता और संप्रभुता दिखाई देती है। हम सभी को हिंदू धर्म की शिक्षाओं की आवश्यकता है, जो उन्होंने पूरी दुनिया को जनसेवा, भक्ति, आस्था, पारिवारिक एकता, आपसी समझ की प्रवृत्ति आदि में दी है। भले ही मैं एक ईसाई हूं, किन्तु मैंने सभी धर्मों के लिए सहिष्णुता और सम्मान का एक तरीका यहां से सीखा है। लंदन के स्वामिनारायण मंदिर में प्रदर्शनी में प्रदर्शित की गई भगवान स्वामिनारायण की कर्मशक्ति और सर्वोत्कर्ष की भावना मैंने प्रमुखस्वामीजी में जीवित देखी है।

जब मैं प्रमुखस्वामी महाराज से मिला, तो मैं वास्तव में दो बातों से प्रभावित हुआ। एक तो ऐसे भव्य मंदिर के निर्माण की दृष्टि। हिंदुत्व का ये कैसा अद्वितीय असाधारण बयान बन गया है?! और दूसरी बात जिसने मुझे आज भी प्रभावित किया है, वह है प्रमुखस्वामीजी महाराज के साथ आध्यात्मिक अनुभूति, और इस मंदिर में बनाया गया सौहार्द और सद्भाव का माहौल भी। यह स्थान और इसके मूल्य जीवन भर मेरे साथ रहेंगे। ◆

प्रिंस चार्ल्स
(इंग्लैंड के राजकुमार, रेड क्रॉस एवं कई सामाजिक सेवाओं के सूत्रधार)

मुझे सेंट जेम्स पैलेस में प्रमुखस्वामी महाराज से हुई मुलाकात याद है। उनकी विनम्रता और सभी जीव-प्राणियों के लिए उनकी करुणा से मैं बहुत प्रभावित हुआ हूं। वे सबकुछ भगवान पर छोड़ देते हैं। ऐसी निर्मानता और अहंशून्यता को सिद्ध करना बहुत कठिन कार्य है। लंदन के शानदार बी.ए.पी.एस स्वामिनारायण मंदिर की नक्काशी से बहुत प्रभावित हूं। मंदिर लंदन के नक्शे की सबसे आकर्षक और राजसी विशेषताओं में से एक है। जैसे ही मैंने इसे देखा, मेरी आत्मा जान गई कि वह जाग रही है। यहां अपना सर्वस्व न्योछावर कर देनेवाले स्वयंसेवकों से मिल कर ऐसा लगता है कि यह एक बड़ी उपलब्धि है, जो प्रमुखस्वामी महाराज से प्रेरित है। आज के समाज को हिंदू सिद्धांतों से बहुत कुछ सीखना है। यहां आनेवाला कोई भी व्यक्ति शांति और हिंदू धर्म की भावना का अनुभव किए बिना नहीं जाएगा। यही कारण है कि मुझे खुद पर विश्वास है। ◆

दलित और पिछड़े वर्ग के उद्धार की ज्योति प्रकट करनेवाले करुणामूर्ति

भगवान श्रीस्वामिनारायण

यह बात है आज से दो सौ वर्ष पूर्व की। 18वीं सदी का सूरज डूब चुका था और 19वीं सदी का उदय हो चुका था। गुजरात या भारत ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया अंधेरे में जूझ रही थी। दु:ख, दरिद्रता और दमन से पीड़ित लोग मदद के लिए चिल्ला रहे थे। उस समय पश्चिम भारत में एक आनंद की लहर छा गई और इसीलिए महान संत कवि निष्कुलानंद स्वामी हाथ में करताल लिए गढ़डा की सीवान में बैठे हुए गान कर रहे थे: 'आनंद आप्यो अति घणो रे...; वे बात कर रहे थे – परब्रह्म भगवान श्री स्वामिनारायण की।

समर्थ और सर्वावतारी, सूर्य के जैसे तेजस्वी भीतर और बाहरी अंधकार को नष्ट करनेवाले आनंद के उजाले फैलानेवाले थे भगवान श्रीस्वामिनारायण...

उनकी इस पंक्ति में भगवान स्वामिनारायण के युग-कार्य की सराहना थी।

न केवल स्वामिनारायण संप्रदाय के, बल्कि देश-विदेश के उन कई लोगों ने भगवान स्वामिनारायण के जीवन और कार्यों की हृदय से सराहना की है, जिन्होंने इसका गहराई से अध्ययन किया है, संप्रदाय के अनुयायी के रूप में नहीं, बल्कि एक तटस्थ विश्लेषक के रूप में।

भगवान स्वामिनारायण के जीवनकाल के समकालीन,

1823 में लंदन से प्रकाशित एशियाटिक जर्नल में, भगवान स्वामिनारायण द्वारा किए गए आमूल-चूल परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए, उन्होंने लिखा: 'In his lifetime, the most intelligent people in the province, while they regretted (as Hindus) the levelling nature of his system, acknowledged their belief that his preaching had produced great effect in improving the morals of the people.'[1]

अर्थात् प्रांत के सर्वश्रेष्ठ बुद्धिमान लोगों का मानना है कि श्री स्वामिनारायण की शिक्षाओं ने लोगों की नैतिकता में सुधार करने में बहुत प्रभाव डाला है। ऐसा कहकर उस रिपोर्टर ने निष्कर्ष निकाला कि 'मेरा मतलब है, मूल निवासियों के साथ किए गए साक्षात्कार में मेरा अपना अनुभव भी मुझे यही राय बनाने के लिए प्रेरित करता है।'

एक उत्साही विद्वान और भारत के संविधान के निर्माता कन्हैया लाल मुंशी लिखते हैं: 'ब्राह्मण, बहुश्रुत विद्वान, चुस्त वैष्णव और आदर्श संन्यासी साधु के वेश में उस क्रांतिकारी ने अंतिम धार्मिक युग का प्रतिनिधित्व करते हुए उन्नीसवीं शताब्दी की दहलीज पर दस्तक दी।'[2]

और कवीश्वर नन्हालाल के शब्दों में कहा जाए तो 'महान पुरुष दुनिया पर संजीवनी छिड़कते हैं। स्वामिनारायण ने संसार को संजीवनी की बौछार से पुनर्जीवित किया। स्वामिनारायण ने क्या किया? इतिहास के उस प्रश्न का उत्तर एक सूत्र में पूछें तो मानो श्रीजी महाराज ने सरयूनीर से गुजरात को धोकर ब्रह्मसिक्त किया। स्वामिनारायण नव युग के प्रात:काल के सूर्य थे।'[3]

प्रसिद्ध समीक्षक ईश्वर पेटलीकर ने समकालीन समाज के दृष्टिकोण से लिखा है: '49 वर्ष की उम्र में लीला समेट लेनेवाले श्री स्वामिनारायण ने लगातार 30 वर्षों तक उस समय के सभी क्षेत्र का अंधकार नष्ट करने के लिए प्रकाश दिया और इसके लिए सतत गुजरात, सौराष्ट्र और कच्छ में परिभ्रमण किया। इस प्रकार श्रीस्वामिनारायण ने नए युग के भोर-सूर्य को चमकाने के लिए गुजरात में अवतारकार्य किया है। आधुनिक गुजरात के वे प्रथम ज्योतिर्धर थे।'

उस अंधकार युग में केवल तीन दशकों में ही भगवान स्वामिनारायण ने अपने कल्याण कार्य का जो धुआंधार अमृत मेघ बरसाए थे। उनके परोपकारी अमृत के कई आयामों को प्रस्तुत करते हुए एक उत्साही गांधीवादी विचारक और लेखक किशोरलाल मशरूवाला लिखते हैं, 'अपने प्रकाश से अनेकों के हृदयों को प्रकाशित करनेवाले सहजानंद स्वामी (भगवान स्वामिनारायण) थे।'

क्या होता अगर उस सहजानंदी सूरज की रोशनी इस धरती पर न फैली होती? समाज में सैकड़ों वर्षों से उत्पीड़ित पिछड़े, शोषित और निम्न जाति के लोगों के उद्धार के लिए शांतिपूर्ण क्रांति कैसे हो सकती?

भगवान स्वामिनारायण के सामूहिक उद्धार के महान कार्य में दलितों की उन्नति की वह उनके व्यक्तित्व का एक विशेष पहलू है। उन्होंने पिछड़ों के उद्धार के लिए कौन-सा विशेष मार्ग अपनाया?

तोड़फोड़ नहीं, पुनः निर्माण का तरीका:

एक व्यापक मान्यता है कि क्रांति तभी होती है जब आप पुराने को उखाड़ फेंकते हैं और कुछ नया लगाते हैं। ऐसी क्रांति में आक्रामकता होती है, विद्रोह होता है, टूटने का हिंसक रवैया होता है। जब-जब दुनिया में क्रांति हुई है, एक खूनी युद्ध हुआ है। संघर्ष की आग में कई लोगों की जान चली गई है।

लेकिन भगवान श्रीस्वामिनारायण की क्रांति शांत थी। दलितों-अंत्यजों-पिछडों की उन्नति के लिए उनकी क्रांति आक्रामकता नहीं थी, उग्रता नहीं थी, बल्कि एक शांत और शास्त्रीय दृष्टिकोण था। उन्होंने सदियों पुरानी जाति व्यवस्था को नहीं तोड़ा। उन्होंने समाज के लिए एक नया मार्ग प्रशस्त किया: किसी भी मनुष्य को कर्म से श्रेष्ठ नहीं बनाया जा सकता है। चाहे वह किसी भी कुल में पैदा क्यों ना हुआ हो? उन्होंने लोगों को शास्त्रों का सही अर्थ समझाया। उन्होंने समझाया कि शास्त्र मनुष्य को संस्कार के आधार पर ही श्रेष्ठ या हीन मानते हैं, कुल के आधार पर नहीं। जड़ता हमारे पवित्र शास्त्रों में नहीं है, जड़ता हमारी व्याख्या और हमारे अहंकार में है।

शास्त्रों का अधूरा अध्ययन हमें अंधा बनाता है, अहंकारी बनाता है। इसलिए हम दूसरों को हीन समझते हैं। शास्त्रों का सही अर्थ बताते हुए उन्होंने कहा कि जन्म से ऊंच-नीच का भेद करना हमारी दृष्टि का दोष है। पैदा हुए सभी भले ही शूद्र हैं, लेकिन ज्ञान-कर्म उसको उत्कृष्ट बनाता है। प्राचीन भारत के शास्त्रों में ऐसे कितने उदाहरण हैं! जन्म से ब्राह्मण न होकर कर्म से उन्नति करके ब्राह्मण बनने के कुछ प्राचीन भारतीय उदाहरण यहां दिए गए हैं -

- वैदिक काल में शूद्र-कन्या इलुषा का पुत्र कवष कर्म से ब्राह्मण पद को प्राप्त हुआ और वह यज्ञ में पुजारी भी बना। (ऐतरेय ब्राह्मण, 2.19)।

1. Asiatic Journal, First Series, London, 1823, XV, p.348-349.
2. कनैयालाल माणेकलाल मुंशी, 'गुजरात की अस्मिता' पृ. 63
3. 'कवीश्वर दलपतराम' : काव्यदीक्षा भा. 1, आवृत्ति 1ली (1933).

● पौराणिक युग में, अजमीढ और पुरुमीढ दोनों भाई क्षत्रिय थे, लेकिन उन्होंने पवित्र कर्म करके अपने वंश सहित ब्राह्मणों की स्थिति प्राप्त की। (वायुपुराण: 91.116)।

● शंतनु और देवापि, निचली जाति में पैदा हुए दो भाई, कर्म से विकसित हुए। एक क्षत्रिय बना और दूसरा ब्राह्मण पुजारी बन गया। (महाभारत, शैल्यपर्व, 39.10)

● श्रीमद्भागवत में धृष्टक जाति का जिक्र किया है, जो पूरी निचली जाति थी, लेकिन कर्म से उत्थान करके ब्राह्मण बन गई! (वॉल्यूम 9.2.17)

इन सभी उदाहरणों का सार यह है कि प्राचीन भारत में आनुवंशिकता का त्याग कर ब्राह्मणत्व को प्राप्त किया जा सकता था। प्राचीन भारतीय ऋषियों ने संस्कारों के माध्यम से जाति व्यवस्था में विकास की एक सुंदर प्रणाली के बारे में सोचा था।

महाभारत में विस्तार से बताया गया है कि भले ही कोई शूद्र के रूप में पैदा हुआ हो, लेकिन अच्छे कर्म और अच्छे आचरण से वह ब्राह्मण बन सकता है और उसके बिना ब्राह्मण कुल में पैदा हुआ व्यक्ति भी पतित होकर शूद्र बन जाता है। इसी प्रकार अन्य जातियां भी उठती या गिरती हैं:

कर्मणा दुष्कृतेनेह स्थानाद् भ्रश्यति वै द्विजः।
ब्राह्मण्यात् सः परिभ्रष्टः क्षत्रयोनौ प्रजायते।
स द्विजो वैश्यतां याति वैश्यो वा शूद्रतामियात्।
एभिस्तु कर्मभिर्देवि, शुभैराचरितैस्तथा।
शूद्रो ब्राह्मणतां याति वैश्यः क्षत्रियतां व्रजेत्।[4]

मनुस्मृति (9-355) भी स्पष्ट रूप से यह कहती है:

शुचिरुत्कृष्टशुश्रूषुः मृदुवागनहंकृतः।
ब्राह्मणाद्याश्रयो नित्यमुत्कृष्टां जातिमश्नुते॥

संस्कारों के माध्यम से ब्राह्मणत्व प्राप्त करने की यह प्राचीन भारतीय परंपरा मध्य युग में विलुप्त हो गई। इसे भगवान स्वामिनारायण ने एक नए दृष्टिकोण के साथ अपनाया था। वह जाति व्यवस्था को तोड़े बिना जाति व्यवस्था में घुसे अमानवीय अपराधबोध को दूर करने में सक्षम थे - यही उसकी पहचान रही है। फ्रेंच विद्वान फ्रान्जवां मेलिसां ने भगवान स्वामिनारायण की इस सफलता को उल्लेखनीय बताते हुए कहा: 'इस संप्रदाय को हिंदू समाज में सुधार का पहला प्रयास कहा जा सकता है। स्थापित सामाजिक व्यवस्था का उल्लंघन करने और पारंपरिक मूल्यों का पालन करने के अलावा, इस सुधार ने निम्न वर्ग और महिला अनुयायियों के उत्थान का बहुत अच्छा काम किया है। यही इसकी वर्तमान सफलता का कारण है, जो बाद में नव-हिंदू धर्म के सुधार आंदोलन से आगे निकल गया।'

किशोरलाल मशरूवाला कहते हैं: 'स्वामिनारायण की निचली जातियों को सुसंस्कृत करने का तरीका अलग था। उनका सुधार ऊंची जातियों को कमजोर करने के लिए नहीं था, बल्कि निचली जातियों में ऊंची जातियों के संस्कार देकर उनको उत्थान के लिए प्रेरित करना था। इसलिए उन्होंने उस समय पिछड़े समझे जानेवाले दलितों और अन्य जातियों के लोगों को शुद्ध ब्राह्मण की तरह रहने की शिक्षा दी। शराब न पीना, मांस न खाना, बिना छाना हुआ दूध और पानी न पीना और प्याज, लहसुन और हींग जैसी मादक चीजों से परहेज करना - ये स्वामिनारायण संस्कार थे।'[5]

जाति नहीं, खुद को बदलने का तरीका:

भगवान स्वामिनारायण ने पिछड़ों के उद्धार के लिए एक रचनात्मक दृष्टिकोण अपनाया: कर्म बदलो, जाति नहीं; खुद को बदलें, जाति को नहीं। आइए, कुछ ऐतिहासिक अवसरों से समझते हैं कि कैसे भगवान स्वामिनारायण ने संस्कार के माध्यम से अंत्यजो-दलितों के विकास के लिए रचनात्मक दृष्टिकोण अपनाया और कैसे उन्होंने निचली जातियों को संस्कार देकर उनका उत्थान किया।

वडोदरा के पास छानी गांव में संतों के सत्संग से बुनकर तेजभाई स्वामिनारायणी सत्संगी बने। इससे गांव के अन्य हरिजन प्रभावित हुए। हरिजनों का पूरा समूह स्वामिनारायण के शुद्ध आचरण से सुशोभित हो गया। छानी के अलावा, कराचिया, बाजवा, सांकरदा, पोइचा, भादरवा, वासना, कोतारिया आदि कई गांवों में सैकड़ों हरिजन परिवारों में स्वामिनारायण प्रभाव अभी भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

एकबार भगवान स्वामिनारायण महाराजा सयाजीराव दूसरे के निमंत्रण पर वड़ताल से वडोदरा गए। रास्ते में छानी गांव का सिवान आया। वहां गाँव के हरिजन हरिभक्तों का एक समूह उनका अभिनन्दन करने के लिए खड़ा था। एक पेड़ के नीचे भगवान का स्वागत किया। भगवान स्वामिनारायण ने उसकी भावनाओं को स्वीकार कर लिया। चूंकि भगवान स्वामिनारायण हरिजनों को स्वीकार करने से गांव के नेताओं ने एक घोषणा की थी कि ब्राह्मण, बनिया, वैश्य या क्षत्रिय में से कोई भी उच्च जाति का व्यक्ति स्वामिनारायण के दर्शन करने नहीं जाना चाहिए। इसलिए यहां केवल हरिजन दर्शन करने आए थे। भगवान स्वामिनारायण हरिजन भक्तों की शुद्ध भक्ति से प्रसन्न थे। आशीर्वाद देते हुए उन्होंने कहा: 'जाओ,

4. महाभारत, अनुशासन पर्व, अ. 143, 7, 9, 11, 26.

5. 'सहजानंद स्वामी या स्वामिनारायण संप्रदाय' पृ. 63, 64

ब्राह्मणों के जैसी शुचिता, पांडित्य और बुद्धि और सद्गुण आपमें आएंगे। आप ऐसा व्यवहार करेंगे जिससे ब्राह्मणों को शर्मिंदगी उठानी पड़े।'

इतिहास ने दिखाया है कि भगवान स्वामिनारायण का आशीर्वाद इस जाति में सफल हुआ है। आधुनिक इतिहास में यह एक दुर्लभ घटना है कि कोई व्यक्ति साधना और विश्वास के माध्यम से अपने जीवन के समग्र विकास को प्राप्त कर सकता है – और इसे अपने छोटे जीवन काल में प्राप्त कर सकता है। भगवान स्वामिनारायण ने इस दुर्लभ घटना की रचना की।

श्री स्वामिनारायण के वात्सल्य प्रेम के कारण छानी के हरिजनों का समग्र विकास कैसे हुआ? इतिहास बताता है कि हरिजनों का भाषण-व्यवहार ब्राह्मणों से बेहतर साबित हुआ। यह 1830 और 1850 के बीच की बात है। वडोदरा के कुछ संभ्रांत लोगों ने छानी के बुनकर तेजाभाई के खिलाफ स्थानीय अदालत में शिकायत दर्ज कराई कि ये हरिजन सफाई का काम ठीक से नहीं कर रहे हैं, वे राज्य द्वारा उन्हें सौंपे गए सफाई कार्य को करने नहीं आ रहे हैं। तेजाभाई को पेश होने का आदेश दिया गया था। तेजाभाई और अन्य हरिजनों ने भाग लिया। अमलदार एक ब्राह्मण था। उन्होंने पूछा: 'आप सफाई के लिए क्यों नहीं जाते?' तेजाभाई ने विनम्रता से लेकिन दृढ़ता से उत्तर दिया: 'हमारे भगवान ने हमें निरंतर ब्राह्ममुहूर्त में जागने की आज्ञा दी है, इसलिए हमें ब्राह्ममुहूर्त में जल्दी उठना चाहिए, स्वयं को शौचस्नान से शुद्ध होना चाहिए और ध्यान-पूजन करना चाहिए। और पूजा करने के बाद हम सूर्योदय से पहले वहां सफाई का काम करने पहुंच जाते हैं ! उनके जागने से पहले, हम अपना काम संपूर्ण करते हैं, फिर घर जाते हैं, और फिर से स्नान करके पवित्र बन जाते हैं और भगवान की भक्ति करते हैं। जागने में उन्हें देर होने से सफाई काम करते हुए हमको वह कभी नहीं देख सकते!'

जो लोग बहुत छोटे माने जाते हैं, शुद्ध ब्राह्मण के समान पवित्र और नैतिक, भक्तिमय जीवन व्यतीत करना – एक ब्राह्मण नौकरशाह की कल्पना से परे था। ब्राह्मण अधिकारी ने देखा कि तेजाभाई के माथे पर तिलक-टीका उनकी सच्चाई की गवाही दे रहा है। नौकरशाह हरिजनों की विनम्रता, शुद्धता और कर्तव्यनिष्ठा से बहुत प्रभावित हुए।

एक और घटना हुई। यहां एक स्थानीय अधिकारी के परिवार में एक शादी थी। लेकिन किसी की अचानक मौत के कारण शादी को टालना पड़ा। सैकड़ों मनुष्यों के लिए निर्मित व्यंजन बचे थे। नौकरशाह ने तेजाभाई को खाना उठा ले जाने के लिए कहा, लेकिन तेजाभाई ने कहा: 'क्षमा करें, आपका खाना हमें नहीं रास आएगा!' किस हैसियत से एक तथाकथित निम्न जाति का एक आम आदमी एक उच्च ब्राह्मण कुल के एक उच्च पदस्थ अधिकारी से कह रहा था: आपका खाना हम नहीं खा सकते!

'अरे! तुम तो हमारी जूठन खानेवाले हैं, हमारा खाना क्यों नहीं खा सकते?'

जब नौकरशाह ने स्पष्टीकरण मांगा तो तेजाभाई ने कहा: 'हम भगवान स्वामिनारायण द्वारा दिए गए शिक्षापत्री के आदेश के अनुसार पानी, दूध, आटा आदि को छानकर ही इससे खाना बनाते हैं और फिर हम भगवान को भोग लगाकर खाते हैं। यदि आप जो खाना बनाते हैं उसमें बिना छाने पानी या दूध उपयोग किया जाता है और वह सबकुछ है जो भगवान को भोग नहीं लगाया है, उसमें सफाई नहीं है, तो हम उसे खाने में उपयोग नहीं कर सकते!'

नौकरशाह झुक गए।

यह उस शुद्ध व्यवहार का प्रभाव था जिसे भगवान स्वामिनारायण ने कल्पना से भी ऊंचा कर दिया था।

ऐसा ही कुछ जूनागढ़ के नवाबी राज्य के साथ हुआ। इसका अनुभव जूनागढ़ के राजस्व विभाग के एक वरिष्ठ सिविल सेवक ने किया था। उनकी पत्नी ने 'गोवा' (गोविंद) नामक एक हरिजन को अतिरिक्त सब्जी दी। गोवा ने कहा: 'बा! आपकी कढी हम नहीं खा सकते!' 'क्यों नहीं? क्या तुम हमसे उच्च हैं?'

गोवा ने कहा: 'हम ऊंच-नीच में विश्वास नहीं करते, क्योंकि हम स्वामिनारायण के आश्रित हैं। आपका अपमान करने के लिए नहीं, बल्कि आप ब्राह्मण हैं। बहुत स्वादिष्ट खाते हैं, तो आपने कढी में लहसुन की चटनी डाल दी है और हमारे लिए इसे अखाद्य कहा जाता है। हम लहसुन या प्याज नहीं खाते।' पत्नी के साथ गोवा का यह वार्तालाप सुनकर वे दौड़ते हुए आए। जब वे गोवा से मिले तो यह सुनकर चकित रह गए। उन्होंने गोवा का परिचय मांगा। गोवा ने कहा: 'भगवान स्वामिनारायण के महान संत गुणातीतानंद स्वामी के प्रसादीभूत स्वामिनारायण मंदिर में मैं स्वच्छता की सेवा करने जाता हूं, सेवा में संतों की मदद करता हूं, और उनकी कथा सुनता हूं – यही इनका प्रताप है!' अधिकारी ने कहा: 'गोवा, आज से तुम्हें मैला ढोने से मुक्त करता हूं। तुम सबका मुकादम। मैं तुझे राज्य की ओर से एक घर देता हूं, उसमें रहना और भजन करना!'

स्वामिनारायण संस्कारों ने ऐसे कई उदाहरण बनाए हैं, जिनमें सवर्णों से भी श्रेष्ठता का शुद्ध आचरण निचली जातियों में चमकता हुआ दिखाई देता है।

सौराष्ट्र के झालावाड़ के लिमली गाँव के एक देवी-पूजक सगराम वाघरी में स्वामिनारायण का सत्संग हुआ और उनका पूरा जीवन सभी को विस्मित करता रहा। एकबार वह यात्रा पर जा रहे थे। प्यास लगने पर रास्ते में नदी पर गए। उसी समय गांव शियानी के शिवराम भट्ट भी नदी में पानी पीने आए। शिवराम भट्ट ने सीधे तौर पर खूब पानी पिया। लेकिन सगराम ने अपना लोटा निकाला, उसे रेत से जगमगाया। उसमें कपड़े से छानकर पानी भरा और फिर उसे अच्छी तरह धोया। कपड़े से छानकर उसमें फिर से पानी डाल दिया। और फिर भगवान को याद करते हुए पानी पिया। सगराम की पवित्रता देख शिवराम भट्ट चकित रह गए। ब्राह्मण होते हुए भी वे पवित्रता का पालन नहीं कर सकते थे, जो स्वामिनारायण संस्कार से उच्च चरित्रवान बनकर एक सामान्य रूप से तिरस्कृत कुल के सगराम उसका पालन कर रहे थे!

सौराष्ट्र के तड़ गांव के जेठा की कहानी भी संप्रदाय में प्रसिद्ध है। वह एक ब्राह्मण की तरह पवित्र जीवन जीता था। एक नौकरशाह खेतों को देखने के लिए घुड सवार होकर निकला। उसने सहचर से पूछा: 'यह किसका खेत है?' तब पटेल ने कहा: 'वह जेठा का है।' तो नौकरशाह ने आश्चर्य से पूछा: 'क्या वह बैल रखता है?' पटेल ने कहा: 'पूरे गाँव में उसके जैसा बैल किसी के पास नहीं है!'

नौकरशाह जेठा के पास गए और सबकुछ पूछा। उसकी नज़र हट गई: 'उस बैरनी के नीचे क्या है?'

जेठा कहता है: 'पानी का एक मटका है, इसलिए मैंने इसे मिट्टी के ढक्कन से ढँककर रखा है ताकि कौवा उस पर न बैठे।'

'लोटे को अलग से क्यों रखा है?'

जेठा कहते हैं: 'यदि शौचालय जाना हो, पानी लेना चाहिए न! पीने का पानी अलग है!' जेठा की सफाई की बात सुनकर नौकरशाह दंग रह गए।

पटेल ने जेठा की तारीफ की और कहा: 'सर! इस गांव में यह एकमात्र जेठा है जो एकादशी का व्रत करता है और उसके जैसा कोई नहीं है। उनका नियम है कि हर दशमी को ऊना स्वामिनारायण मंदिर जाएं, एकादशी का व्रत करें और भजन करें, दूसरे दिन द्वादशी का पारणा करने के बाद वापस घर लौटता है। वह हमेशा सुबह तड़के उठता है, स्नान करता है और पूजा करता है, तिलक-टीका लगाता है और चमकीले कपड़े पहनता है।'

यह एक उदाहरण यह समझने के लिए पर्याप्त है कि स्वामिनारायण ने एक क्षुद्र जाति के लोगों को कैसा महिमा-मंडित कर दिया था! जो एक समय में मछली पकड़कर निर्वाह करते थे और मवेशियों की तरह रहते थे।

यह कल्पना करना कठिन है कि भगवान स्वामिनारायण को पीढ़ियों से नरक में तड़प रहे आम लोगों की इतनी उच्च स्तर की नैतिकता को शुद्ध करने के लिए कितना प्रयास करना पड़ा होगा! भगवान स्वामिनारायण और उनके परमहंस कैसे उस समय के सबसे कठोर रूढ़िवादी किलेबंदी के बीच उन लोगों की झोपड़ियों में जाकर काम किए होंगे? जहां पीढ़ी दर पीढ़ी सवर्ण की एक छाया भी नहीं गिरी है? आज यह समझना मुश्किल लगता है।

'गुजरात का राजनीतिक और सांस्कृतिक इतिहास' भगवान स्वामिनारायण द्वारा संस्कार के माध्यम से दलितों के उत्थान की प्रक्रिया का वर्णन करते हुए कहता है कि 'श्रीस्वामिनारायण का निचली जातियों में संस्कार मूल्यों को स्थापित करने का कार्य अद्वितीय था। निचली जातियों में उच्च सांस्कृतिक मूल्यों को विकसित करने और उन्हें ऊपर उठाने का कार्य सहजानंद स्वामी के सुधारों का केंद्रबिंदु था। स्वामिनारायण के आदर्श जैसे शराब, मांस, नशीला पदार्थों का सेवन नहीं करना, रोज नहाना और पूजा किए बिना खाना-पीना नहीं, बिना छाने दूध न पीना आदि उनके आदर्श थे।'[6]

दुर्गाशंकर के. शास्त्री नोट करते हैं कि 'उन्होंने गुजरात-काठियावाड़ की निचली जातियों को ऊपर उठाने में बहुत अच्छा काम किया है। जैसे कि उन्हें शराब आदि व्यसनों से मुक्त करना, हिंसा कर्म छुड़ाना, उन्हें शौच-स्नानादि आचार सिखाना इत्यादि। यही कारण था कि अंग्रेजों ने स्वामिनारायण को अपने समय में महान कहा था।'[7]

भगवान स्वामिनारायण ने निचली जातियों के उत्थान को यशवंत शुक्लजी ने 'संस्कृतीकरण' कहा है।

इतिहास के पास दिखाने के लिए कई उदाहरण हैं। त्रिभोवन गौरीशंकर व्यास, गुजराती साहित्य और इतिहास के जाने-माने विद्वान, देवी-पूजक सगराम वाघरी का एक प्रसंग अच्छी तरह से वर्णन करते हैं। लिमली गाँव के एक अशिक्षित सगराम के लिए श्रीमद्भागवत के एक कथाकार विद्वान ब्राह्मण शिवराम भट्ट को आध्यात्मिक प्रश्नों में हरा देना और शिवराम को सत्संगी करके साधु बनने के लिए प्रेरित करना सचमुच असंभव घटना है! लेकिन भगवान स्वामिनारायण के प्रभाव से यह संभव हो गया।

---

6. आर. सी. परीख और एच. जी शास्त्री, 'गुजरात का राजकीय और सांस्कृतिक इतिहास, मराठा काल', अहमदाबाद, भो.जे. संशोधन केन्द्र, 1981 पृ. 318-39
7. दुर्गाशंकर के. शास्त्री, 'वैष्णव धर्म का संक्षिप्त इतिहास, फार्बस, मुंबई, 1939, मुंबई, पृ. 420

भगवान स्वामिनारायण ने न केवल उन लोगों के आचरण को शुद्ध किया, बल्कि उनमें उच्च ज्ञान का संचार कर उनका सिर भी ऊंचा किया। अठारहवीं शताब्दी के रूढ़िवादी समाज का वर्णन करते हुए, ईश्वर पेटलीकर ने नोट किया है कि 'उन दिनों, श्री स्वामिनारायण ने पिछड़ी जातियों के सुधार के लिए कार्य किया। उनकी मंशा थी कि यह जाति भी भक्तिपूर्ण और ज्ञानप्रबुद्ध होनी चाहिए। वे उन गरीब, अशिक्षित और वंचितों के घर पधारते। भाव स्वीकार कर उनके मेहमान बन जाते। भक्त भले ही उन्हें पूज्य मानते थे, लेकिन उनके साथ वह ऐसा व्यवहार करते थे मानो वे उनके करीबी रिश्तेदार हों...!'[8]

तत्कालीन पतित समाज के प्रभाव का वर्णन करते हुए पेटलीकर आगे कहते हैं: 'उनकी विशाल दृष्टि में एक व्यापक लोकहित था, जो अंतिम मनुष्य के लिए सोचते थे। ब्राह्मण जैसे उच्च वर्ग के शिक्षित और सदाचारी होने पर ही धर्म का कार्य समाप्त नहीं होता, बल्कि शिक्षा, स्वच्छता और सदाचार का विस्तार निम्न स्तर के बड़े समाज तक होना चाहिए। स्वामिनारायण वर्णाश्रम धर्म और श्रेष्ठता के भेद में विश्वास करते थे, लेकिन उच्च धर्म पालन कराने में मानते थे। उन्होंने निम्न वर्णों में ज्ञान और धर्म का प्रसार किया। श्रेष्ठता का क्या अर्थ है यदि जो ऊँचा है वह दूसरों को ऊँचा नहीं लाता? अपनी श्रेष्ठता को खतरे में डाले बिना जो नीचे है उसे ऊपर उठाता है वही सच्चा उच्च है... उसी प्रकार साधुओं, संतों, ब्राह्मणों और गुरुओं की श्रेष्ठता का रंग पक्का तब कहा जाता है जब वह अंतिम व्यक्ति पर अपना रंग डालते हैं।'

यह भगवान स्वामिनारायण का प्रमुख व्यक्तित्व गुण था: अंतिम व्यक्ति को अपने रंग में रंगना। इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि स्वामिनारायण हरिजनों या अन्य नीच भक्तों के मुख से ज्ञान की धारा बहती हो और संप्रदाय के साधु-संत एवं सवर्ण इसे पी रहे हों!! वडोदरा के पास छानी गांव में, भगवान स्वामिनारायण ने हरिजनों को यह कहकर आशीर्वाद दिया कि 'आपमें ब्राह्मण जैसा पांडित्य आएगा। आपका आचार व्यवहार ऐसा शुद्ध होगा जो ब्राह्मणों को शर्मिंदा करेगा।' इस आशीर्वाद से दलितों में ऐसे अनेक रत्न पैदा हुए कि जिनके स्मरण से आज सब धन्यता अनुभव करते हैं। ऐसे पुण्यश्लोक प्रत्याशियों में कवि नारायणदास पुंजाभाई का नाम अमर है। स्वामिनारायण संप्रदाय में यह हरिजन भक्तराज नारायणदास की अमर भजन विरासत से शायद ही कोई अनजान होगा। अजनबी शायद ही मिलेगा। आज भी, जब संत और हरिभक्त नारायणदास के भक्ति पदों को जोश से गाते हैं, एक अलौकिक वातावरण बनता है।

स्वभाव बदलें, जाति नहीं:

भगवान स्वामिनारायण ने निचली जातियों को उच्च दर्जा देने, उन्हें खेती करने में तीसरा महत्वपूर्ण कदम उठाया - जातियों से अनैतिकता की छाप को मिटाने के लिए।

उस समय दलित जातियों के प्रति आम जनता में घृणा थी, जिसमें उनकी अनैतिक प्रवृत्ति भी जिम्मेदार थी। सवर्णों की अवमानना के कारण इस वर्ग के लिए आजीविका का बड़ा प्रश्न था। ऐसी परिस्थितियाँ थीं जहाँ कुछ लोगों को अनैतिक गतिविधियों का सहारा लेना पड़ता था क्योंकि जीविकोपार्जन का कोई रास्ता नहीं था। और परिणामस्वरूप, अनैतिकता स्थायी हो गई थी।

भगवान स्वामिनारायण ने इन पात्रों से अनैतिकता के कलंक को मिटाने का बहुत अच्छा काम किया। कन्हैया लाल मुंशी ने लिखा है कि 'उन्होंने समाज से बुराइयों को दूर किया और नीतिगत समझ के सही मानकों का प्रसार किया। उन्होंने उस समय के समाज में व्याप्त व्यभिचार और दु:ख को दूर किया। उनके प्रयासों से गुजरात के नीतिभ्रष्ट वर्ग में सुधार हुआ और वह नीतिवान हो गया।'

सगराम बाघरी या गोविंद भंगी के दृष्टांत उच्च नैतिक मूल्यों को समझने के लिए पर्याप्त हैं जिन्हें उन्होंने समृद्ध किया था। स्वामिनारायणीय संस्कारों ने ऐसे कई उदाहरण बनाए हैं। एक जमाने में परायी चीज की चोरी पर ही जीवन निर्वाह का आधार माननेवाले एक समुदाय के सगराम के परिवर्तन की कहानी रोमांचकारी है! वह दंपति रास्ते में चले जाते थे। आगे सगराम था पीछे पत्नी चली आ रही थी। सगराम ने एक चांदी का गहना देखा। उसने सोचा कि हम स्वामिनारायण के आश्रित हैं। यह दुर्भिक्ष का समय है। यदि पत्नी का मन गहने में लुब्ध हो जाएगा तो... इसलिए उसने नीचे बैठ कर उसे धूल से ढक दिया। पत्नी ने यह देखा। जब दोनों इकट्ठे हुए तब यह बात जानकर स्त्री बोली, 'आपने तो धूल पर ही धूल डाली? जब से मैंने भगवान स्वामिनारायण से सत्संग दीक्षा ली तब से, मैंने परायी वस्तु को धूल के रूप में माना है।' सहजानंदी अस्मिता का वह स्वर इतिहास में अमर हो गया है।

जूनागढ़ के गोविंद भंगी को नवाब के चौक में बेगम की सोने की चेन मिली और जब उन्होंने उसे वापस बेगम को सौंप दिया और कहा, 'हम स्वामिनारायण के आश्रित हैं, इस लिए हम परायी वस्तु को नहीं छुते।' भगवान स्वामिनारायण के द्वारा, उस समय की तथाकथित निचली जातियों में लाए गए

8. ईश्वर पेटलीकर 'श्री स्वामिनारायण और अद्यतन हिन्दु धर्म प्रवाह', आर.आर. शेठ की कंपनी, मुंबई (1980) पृ. 38

आमूलचूल परिवर्तन को देखते हुए 'गुजरात का इतिहास' कहता है: 'सहजानंदजी ने पिछड़ी जातियों से असामाजिक तत्वों और अधार्मिक-अनैतिक गतिविधियों को दूर करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।'

तत्कालीन ब्रिटिश इतिहासकार-लेखक हेनरी जॉर्ज ब्रिग्स लिखते हैं: 'सहजानंद स्वामी (स्वामिनारायण) की प्रतिभा केवल शुद्ध हिंदू धर्म की सख्त बहाली तक ही सीमित नहीं है, बल्कि उन हजारों दुर्भाग्यपूर्ण मनुष्यों के उत्थान तक भी है, जिनकी आजीविका अब तक उस समय के प्रदूषण के खिलाफ गलत और अवैध गतिविधियों पर निर्भर थी। उन्होंने तत्कालीन बड़े समुदायों को ईमानदार और उद्यमी जीवन के पंथ पर मोड़ा है। इस दिशा में सफलता के पर्याप्त प्रमाण हैं।'

प्रसिद्ध ईसाई लेखक भाई एम. सी. पारेख कहते हैं कि[9] 'अछूतों को भी सत्संग से बाहर नहीं रखा जाता था। उन्हें एक शिष्य के रूप में स्वीकारा जाता था। एक-दो जगहों पर उन अछूतों ने अपने मंदिर भी बनवाए हैं। जबकि न तो राममोहन राय और न ही ईसाई मिशनरियों (लेखक स्वयं ईसाई हैं) ने इन दुर्भाग्यपूर्ण मनुष्यों के बारे में सोचा, प्रारंभिक दिनों में उनके प्रति सहजानंद स्वामी का रवैया निम्नलिखित घटना से देखा जा सकता है।' ऐसा कहते हुए लेखक ने भगवान स्वामिनारायण ने अछूतों पर बरसाए वात्सल्य की ऐतिहासिक घटनाओं को उद्धृत किया है।

राजा राममोहन राय से लेकर उन्नत सुधारक या ईसाई मिशनरियों तक, कई लोगों ने दलितों की मुक्ति के लिए काम किया है, लेकिन भगवान स्वामिनारायण ने सबसे पहले बदलाव किया।

और इसीलिए भगवान स्वामिनारायण ने जितना विरोध झेला है, उतना किसी और को नहीं झेलना पड़ा। क्योंकि उस समय का समाज इतनी आसानी से सुधारों को स्वीकार करने के मूड में नहीं था। सदियों से लोक मन में व्याप्त रूढ़ियों, विश्वासों और अंधविश्वासों के अभेद्य किले को तोड़ना बेहद कठिन और लगभग असंभव था। हालाँकि, भगवान स्वामिनारायण ने पारंपरिक समाज की आशंकाओं को दूर करने के लिए पूरी तत्परता से इस चुनौती पर विजय प्राप्त की। क्योंकि उनका लक्ष्य मानव कल्याण था। इसीलिए समाज में एक गंभीर प्रतिक्रिया पैदा हुई थी कि स्वामिनारायण ने अछूतों और दलित जातियों को आश्रित किया है।

नतीजतन स्वामिनारायण के प्रति उच्च जातियों में घृणा बहुत अधिक हो गई थी। भगवान स्वामिनारायण, उनके परमहंस भिक्षुओं, उनके हरिभक्तों और पूरे संप्रदाय को बहुत अपमान सहना पड़ा। एक तो सहजानंदी साधुओं की साधुता; दूसरा, उन्होंने अहिंसक यज्ञों का किया हुआ प्रतिपादन; तीसरा, नशामुक्त शुद्ध जीवन का मार्ग; और उन्होंने सबसे खास दलितों और अन्य पिछड़े समुदायों के लोगों को अपनाया! किशोरलाल मशरूवाला कहते हैं: 'गुजरात-काठियावाड़ की शूद्र जातियों को धार्मिक रूप से ऊपर उठानेवाले स्वामिनारायण भी सबसे पहले थे। उन्होंने तथाकथित निम्न जातियों में इतना काम किया कि स्वामिनारायण के कई शिष्य कुम्हार, दर्जी, बढ़ई, मछुआरे, मोची और बुनकर थे, जो पुराने संप्रदायियों का उस स्वामिनारायण का विरोध करने का सबसे मजबूत कारण प्रतीत होता था।'

समाज की इस प्रतिक्रिया को नोट करते हुए, श्री यशवंत शुक्ल लिखते हैं: 'उन्होंने जो बदलाव किए और उन परिवर्तनों के कारण स्थापित हितों को झटका लगा, उन्होंने स्वामिनारायण को चोट पहुंचाने के लिए कुछ भी कम नहीं किया...। भगवान स्वामिनारायण ने प्रेम और अहिंसा का माहौल बनाया। अपनी परमहंस मंडली को भी दु:खों को सहन करते देखकर उन्होंने अहिंसक तौर से कोमलता और सहिष्णुता का वातावरण बनाया। एक ऐसा वातावरण जो हमारी गुजरात की संस्कृति को आकार देने, पोषित करने, विकसित करने और अर्वाचीनता के प्रति उन्मुख करने में सार्थक सिद्ध होता है।'[10]

आज भी स्वामिनारायण सम्प्रदाय जैसे वैश्विक संप्रदाय को 'वाडो' कहकर घृणा फैलाई जा रही है या तो पारंपरिक घृणा चली आ रही है उसका मूल कारण भी यही है।

हालाँकि, ऐसे कई कुप्रचार के लिए न तो स्वामिनारायण और न ही उनके शिष्यों ने परवाह की। क्योंकि उनका लक्ष्य स्पष्ट था। मानव मुक्ति उनका लक्ष्य था। इसलिए उन्होंने वह सब सहन किया, केवल मानव समाज के कल्याण के लिए।

आज तथाकथित सुधारकों को अंत्योदय के नाम पर गौरव और महिमा मिलती है। भगवान स्वामिनारायण ने स्वयं कई बाधाओं और कठिनाइयों को सहन किया, वह गर्व या यश हासिल करने के लिए नहीं, बल्कि अंत्यजों को गर्व और यश देने के लिए। सचमुच, वे इस दिशा में अपने समय से सैकड़ों वर्ष आगे थे!

दृष्टि बदलें, जाति नहीं:

भगवान स्वामिनारायण सभी के लिए इतना बड़ा शिरछत्र

9. M.C. Parekh, Shri Swaminarayan, Bharatiya Vidya Bhavan, Bombay, 1980, p.194.

10. यशवंत शुक्ल, 'स्वामिनारायण संप्रदाय का प्रदान', 'स्वामिनारायण संतसाहित्य' सं. रघुवीर चौधरी, बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम संस्था (1981) अहमदाबाद, पृ. 126

थे कि पृथ्वी के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति को भी उसमें एक प्यारा स्थान हो। और इसलिए भगवान स्वामिनारायण के गले में अठारहों वर्ण आपस में गुंथ कर माला बन गए। उनके भक्तों में कितनी जातियाँ और उपजातियाँ शामिल थीं! एक आश्चर्य है कि वे दलितों से लेकर ब्राह्मणों तक के इन सभी अठारह वर्णों को अपने शिष्यों में एक साथ कैसे ला पाए। उन्होंने हीन भावना और गुरुत्व ग्रंथि के शीर्ष पर जातिवाद का उन्मूलन कैसे किया? यहीं पर उनके आध्यात्मिक प्रभाव की गरिमा का अनुभव होता है। भगवान स्वामिनारायण के नेतृत्ववाली क्रांति पर कोई सामाजिक आंदोलन नहीं हुआ, लेकिन इसकी जड़ें आध्यात्मिक थीं और यह बहुत गहरी थीं। उन्होंने जो आध्यात्मिकता दिखाई, वह है आत्म-दृष्टि विकसित करना, शारीरिक भावनाओं को छोड़ना। सभी में ब्रह्मभाव की साधना करना, स्वयं को ब्रह्मरूप मानकर परब्रह्म की उपासना करना। उन्होंने सनातन वैदिक परंपरा के इस शुद्ध आध्यात्मिक ज्ञान को सहज रूप से अपनी विशिष्ट शैली में आम आदमी में डाला। और परिणामस्वरूप, यह क्रांति सामने आई। वह इस शाश्वत दर्शन से निचली जातियों की हीन भावना और सवर्णों के गुरुत्व बल को तोड़ने में सफल रहे। 'गुजरात का इतिहास' भगवान स्वामिनारायण की इस आत्मदृष्टि का विशेष रूप से उल्लेख करता है:[11]

'उनकी (भगवान स्वामिनारायण की) शिक्षा का विशेष योगदान जाति व्यवस्था की उपेक्षा करने में नहीं है, बल्कि इसकी जड़ता और पकड़ को नष्ट करने में है।'

भगवान स्वामिनारायण ने जूनागढ़ के पास अगतराई गांव का दौरा किया। जन्माष्टमी की सभा में सभी साधु-संत उनके सम्मुख बैठे थे। उस समय एक हरिजन बालक उनको दूर से देख रहा था। भगवान स्वामिनारायण ने उन्हें समीप बुलाया, फिर पूछा: 'तुम कौन हो?' उसने हाथ जोड़कर कहा: 'महाराज! मैं हरिजन हूं।'

फिर उन्होंने लड़के को कहा: 'तुम बोलो कि मैं हरिजन नहीं हूं, मैं आत्मा हूं।' लड़के को कुछ समझ नहीं आया लेकिन बोल दिया, 'मैं आत्मा हूं।' भगवान ने उससे दस-बार रटाया कि मैं आत्मा हूं। फिर पूछा: 'कौन हो तुम?' उसने कहा: 'महाराज! मैं हरिजन हूं।' यह सुनकर श्रीजीमहाराज हंस पड़े। फिर बोले: 'अब तुम मैं आत्मा हूं ऐसा तब तक बोलो जब तक एक सांस से थक न जाओ।' उसने सौ बार पुकारा कि मैं आत्मा हूं। जब वह रुका तो महाराज ने फिर पूछा: 'तुम कौन हो?' उसने वही कहा: 'महाराज! तुम कहते हो मैं आत्मा हूं, बाकी मैं तो हरिजन ही हूं।'

यह सुनकर श्रीजीमहाराज ने सभा में सभी से कहा: 'शरीर के प्रति उसकी यह समझ गायब नहीं होती है। इस तरह आप सभी इस लड़के की तरह हैं जब तक कि आप सभी काठीपन, साधुपन, पाटीदारवाद से छुटकारा नहीं पा लेते। जब यह अज्ञान दूर होगा, तो आप सभी अपने को आत्मा मानने लगेंगे और ऐसा व्यवहार करने के बाद, आपकी पहचान जाति, नस्ल से नहीं होगी। साथ ही इस तरह के बंधन भी आपको अज्ञानजन्य लगेंगे। आत्मा की भावना दृढ़ हो जाने से ऊंच-नीच का भेद मिट जाएगा। माना जाएगा कि यह भेद कर्म से हुआ है, इसलिए दया और करुणा का भाव सदा मनुष्य के प्रति बना रहेगा चाहे वह नीच हो या ऊंच!'

अछूतों और ऊँच-नीच के आदर्शों से घिरे समाज पर इस शिक्षा का क्या प्रभाव पड़ा! जूनागढ़ राज्य के पंचाला के सोलंकी राजपूत गिरासदार जिनाभाई ने हरिजन जाति के भक्त कमलशीभाई की सेवा स्वयं की! यह कितना अनोखा परिवर्तन है! यह एक नहीं बल्कि भगवान स्वामिनारायण के दिव्य उपहार इतिहास के ऐसे कई पन्नों में झलकते हैं।

मान लीजिए भगवान स्वामिनारायण प्रकट नहीं हुए होते? तो 200 साल तक पिछड़ी जातियों के उत्थान की धारा कैसे बहती रहती? सैकड़ों वर्षों के युग के बाद आज भी इसके प्रभाव जीवित हैं। भगवान स्वामिनारायण के कार्यों का प्रभाव आज और भी तेज़ होता जा रहा है। भगवान स्वामिनारायण के पांचवें आध्यात्मिक उत्तराधिकारी के रूप में संतविभूति प्रमुखस्वामीजी महाराज और वर्तमान में महंतस्वामीजी महाराज उस दिव्य परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं।

चाहे हरिजनवास हों, बाघरीवास हों या आदिवासी की झोपड़ियां, युग-प्रवर्तक प्रमुखस्वामीजी महाराज की वाणी इतिहास में गूँज रही है: 'ईश्वर के घर ऊंच-नीच का भेद नहीं है। इन मतभेदों को मनुष्य ने उठाया है।' हीन भावना और कई अन्य अशुद्धियों से छुटकारा पाने में वे हरिजनवास, बाघरीबास, और आदिवासियों के झोपड़े में अनेक बार विचरण किए हैं। अपने संत-शिष्यों को इन दलितों के बीच लगातार भेजकर दलितों के समग्र उत्थान के लिए निरंतर प्रयासरत रहे हैं। इतिहास के पन्ने देखने पर ऐसा लगता है कि इतिहास 200 वर्षों से प्रवाहित हो रहे भगवान स्वामिनारायण की दिव्य उपकार की, कभी भी पूरी तरह से सराहना नहीं कर सकेगा।

- साधु अक्षरवत्सलदास ◆

11. M.S. Commissariat, History of Gujarat : The Maratha Period : 1758 to 1818, Gujarat Vidya Sabha, Ahmedabad, Vol. III, p.984-985.

दलितों और पिछड़े वर्ग के स्नेही-स्वजन समान वात्सल्यमूर्ति संत

प्रमुखस्वामीजी महाराज

एकबार वडोदरा जिले के कुरई गांव में प्रमुखस्वामीजी महाराज संतों के साथ विचरण में आए थे, तभी ठिकरिया गांव के हरिजन भक्त श्री छगनभाई भी वहां बैठे थे। स्वामीजी ने उनसे कहा कि कीर्तन गाओ। उस भक्त ने गान किया तत्पश्चात, उन्होंने योगीबापा के साथ अपने अनुभवों का भी वर्णन किया। इस समय स्वामीजी ने अपने साथ यात्रा कर रहे एक संत को कैमरा लाने का आदेश दिया। कैमरा आया तो स्वामीजी अपने सम्बंधवाले की तरह छगनभाई के पास खड़े हो गए और एक स्मृतिछवि खिंचाई। इतना ही नहीं, वडोदरा से विचरण करते हुए जब वे मुंबई पहुंचे तो उन्होंने संतों को भी याद दिलाया, कुराई की फोटो छगन को भेजी थी या नहीं?

दलित भक्तों के साथ इतने गहरे स्नेह से बंधे हुए स्वामीश्री 20-3-1971 को पधरावनी करने के लिए लिम्बडी के हरिजनवास पहुंचे। हरिजनों की झोंपड़ियों में पलथी लगा कर बैठ गए। एक खोखले घर में क्या सुविधा हो सके? स्वामीजी को बिठाने के लिए कहीं कालिख पर बोरे बिछाए जाते, तो कहीं फटी टूटी गुदड़ी! फिर भी, स्वामीजी ने प्यार से नीचे झुक झुक कर झोपड़ियों में कदम रखे, जहाँ वे सीधे खड़े नहीं जा सकते थे।

सूर्य को हरिजन या महाजन का भेद नहीं है! वह सबके

लिए प्रकाश लेकर आता है। यहां स्वामीजी हरिजन की झोपड़ियों में गए और बहुतों को व्यसन से मुक्त किया। सदाचारी जीवन जीने का संकल्प दिलाया। पूजापाठ करना सिखाया और 'हरि' जनवास नाम को सार्थक बनाया। उस समय हर झोंपड़ी से आवाज उठ रही थी – बलिहारी जाऊं बार-बार।

समाज में व्याप्त अस्पृश्यता के कलंक को दूर करने के लिए स्वामीजी ने ऐसे कई ठोस कदम उठाए थे।

ऐसे ही एक अवसर पर 29-4-1972 को गंभीरा पहुंचकर स्वामीजी घर-घर गए और सत्संग और धर्ममय जीवन जीने के लिए सबको प्रेरित करने लगे।

गांव में हरिजनों की आबादी भी थी। वे बस इतना चाहते थे कि स्वामीजी के पदचिन्ह हमारी झोंपड़ी में हों। उन्होंने अपनी झोंपड़ियों के पास शामियाने लगा दिए। पूरा हरिजनवास साफ सुथरा कर दिया। इसमें सुंदर मज़ेदार रंगोलियां बनाईं। तोरणमाल लटकाए। जब स्वामीजी पहुंचे तो सभी ने उत्साहपूर्वक उनका अभिवादन किया और स्वामीजी के पैर झोंपड़ी से झोंपड़ी की ओर बढ़ने लगे। उस समय एक-एक करके हरिजन के घर भजन गाए जा रहे थे। इन भगवाधारी में, अंत्योदय के ध्वजवाहकों से कुछ अधिक दैवत का दर्शन सबने किया।

ऐसा ही दर्शन 1-2-1975 की शाम को स्वामीजी रायम जब पहुंचे तब हुआ। यहाँ उनका सभा स्थल था – हलपतिवास!

इसमें रहनेवाले हलपतियों ने कॉलोनी के आंगन में सभा के लिए एक छोटा लेकिन लाक्षणिक सभा हॉल बनाया। इसमें उनके उद्धारकर्ता स्वामीश्री का आसन बेंच पर सुशोभित किया। उस पर, बिराजमान हो कर स्वामीजी ने कहा कि सेठिया के बंगले में जाए या आपकी झोपड़ी में, संत के लिए सबकुछ समान है! सत्संग में पैसा नहीं देना है। सत्संग नि:शुल्क है। भगवान के वहां भेदभाव नहीं है। अपने जीव के भले के लिए सत्संग है।

सामने बैठे हुए प्रत्येक हलपति ने स्वामीजी के इन वचनों का प्रत्यक्ष अनुभव किया। आशीर्वाद के बाद स्वामीजी जब सिर पर हाथ रखकर विदा हुए तो सभी शाम 6:45 बजे भी सामाजिक नवसृजन का सूर्योदय देख रहे थे।

इस सूरज का प्रकाश 24-11-1975 की रात को संदेसर में फैला। यहां कुछ पधरावनियां करने के बाद, स्वामीजी सीधे देवी-पूजकों के निवास पर पहुंचे। उनका यहां आने का निमित्त था – एक कालोनी का भूमिपूजन। यहां के निवासी देवी पूजक स्वामीजी को अपने घर आंगन को पवित्र करवाने के लिए आमंत्रित करने आए, इससे ज्ञात होता है कि स्वामीजी कितने खुले हृदय के संत थे!

एक आँख में समता और दूसरी में स्नेह लेकर चलते हुए, वह इस ऊबड़-खाबड़ भूमि पर बने, बांस की दीवार, फूस की छत वाले इन घरों में उनके साथ आराम से बैठ गए। यहां आयोजित सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि स्वामिनारायण भगवान को जाति-पांति के भेद को छोड़कर सभी को अपनाया है। इस प्रकार स्वामीजी ने सभी को अमृत वर्षा में झकझोर दिया। सभा के बाद भूमिपूजन करके उसका नाम योगी आँगन रख दिया।

उनकी कृपा का लाभ 13-2-1976 को, संदेसर में देवी पूजक निवास को फिर से मिला। इस समय यहां के स्वागत में खूबसूरती से पंडाल सजाया गया था। इन भाइयों ने अपने घरों को भी सजाया था। स्वामीजी ने इनके घरों में पांव रखे तब सभी की बांछें खिल गईं। सभा में पहुंचे, तो यहां सभी ने उनका गर्मजोशी से सम्मान किया।

उसके बाद स्वामीजी ने यह कहते हुए अमृत वर्षा की कि देखो, अगर तुम भक्त बने तो हम सीधे तुम्हारे घर आए। अब जो भी व्यसन करते हैं वह सब छोड़ दें। हमारे लिए एक फूलहार का खर्च भी मत करो। ऐसा पंडाल बनाने की भी जरूरत नहीं है। हम तो नीचे धूल में बैठकर भी कथा करेंगे। यह मत सोचो कि यह एक बड़े पुरुष हैं, वह बिना सुविधा के नहीं चल सकते। हम नीचे धूल में बैठकर भी कहानियां सुनाते आए हैं। आपको बस इतना करना है कि व्यसन छोड़ो और भक्ति करो। अच्छा काम करेंगे तो अच्छा फल मिलेगा। बबुल को खेत में लगाने से क्या आम प्राप्त होता है? ठीक वैसे अगर हम गलत काम करते हैं तो सुख नहीं मिलता। यदि आप थोड़ा भी अच्छा करते हैं तो शांति आप पर बनी रहेगी।

स्वामीजी के ये वचन भक्त सुन रहे थे, क्योंकि उनमें से एक शुद्ध भाव बह रहा था, कोई मांग नहीं। सभा के अंत में स्वामीजी ने सभी के सिर पर जब आशीर्वाद के अभय हस्त रखें तब सभी की आंखें गीली हो गईं और समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी... स्वामीजी विदा हुए तो उस निवास का वातावरण भावार्द्र हो गया।

14-11-1978 को बोचासन मे देवदीवाली सभा के बाद देर शाम तक पूजन चलता रहा। इस वर्ष बीमारियों के कारण स्वामीजी को अब सीढ़ियाँ चढ़ना और सभा में अधिक देर तक बैठना बहुत कठिन लगता था। हालांकि, इस कष्ट के बीच भक्तों को प्रसन्न करने की संतुष्टि के साथ, वे दोपहर में आराम करने जा रहे थे। जैसे ही उनके कमरे का दरवाजा बंद होनेवाला था, चरोतर प्रांत के कुछ श्रद्धालु माला लेकर आ गए। उनका गांव बोचासन से ज्यादा दूर नहीं था, फिर भी उन्हें

किसी कारण से देर हो गई थी। तो सेवकों ने कहा कि स्वामी बापा अब आराम में चले गए हैं। शाम के चार बजे आना।

लेकिन वहाँ स्वामीजी ने यह सुना और वे स्वयंसेवकों से चिल्लाए कि उन्हें आने दो।

उनके द्वार हमेशा सबके लिए खुले रहते थे। स्वामीजी के स्वागत से कमरे की मंद रोशनी जल उठी। स्वामीजी ने प्रेमपूर्वक पुष्पमाला ग्रहण की। उस समय, स्वामीजी ने प्रत्येक के सिर पर हाथ रखा और उन्हें आशीर्वाद देते हुए कहा कि हमारे लिए फूलमाला का खर्च न करें। धर्म नियम का पालन करते हैं उससे भगवान प्रसन्न ही हैं।

इस कृपा से वे भक्त गद्‌गदकंठ हुए। इन देवी-पूजकों को इतना आनंद हुआ जो देव दीपावली से भी अधिक था।

ऐसा ही आनंद 18-2-1976 को करमाड़ के देवीपूजक सोमा को हुआ। आज सुबह जब स्वामीजी पधरामनी के लिए निकले तो यह ग्रामीण अपने दोनों पुत्रों का विवाह करने जा रहा था। स्वामीजी को देखते ही उनके हृदय में अंतर आज उमंगे गावे, प्रमुखस्वामीजी को बधावे... की भावना जाग उठी। उन्होंने शादी के लिए लाए गए बाजे को पधरावनी के साथ जोड़ा। स्वामीजी ने भी उस भक्त के दो बाल-वरों को माला पहनाई और सुखी जीवन का आशीर्वाद दिया!

27-11-1975 की दोपहर को आशी में साढ़े बारह बजे स्वागत स्वीकार कर स्वामीजी दोपहर दो बजे पधरामनी के लिए निकल पड़े। कार्यक्रम पूरा करने के बाद वे आशी के हरिजनवास पहुंचे।

हां, अज्ञानता और गलतफहमी के कारण समाज के सिर में अटके अस्पृश्यता के कलंक को धोने के लिए स्वामीजी दरबार के दरवाजे पर नहीं, हरिजनों के दरवाजे पर जाकर खड़े होते थे। इस प्रदूषण को रोकने के लिए उन्होंने साफ डामर सड़कों पर मार्च नहीं किया, बल्कि वे हरिजनवास की गलियों में घर-घर गए। छुआछूत के इस पाप को धोने के लिए उन्होंने न केवल सभाओं को संबोधित किया, बल्कि हरिजनवास में भी पहुंचकर उनके बीच एक आसन स्थापित किया! स्वामीजी की इस क्रांति को समाज बड़ी आंखों से देखते रहता।

लाखियानी के एक बुनकर को यह अहसास हुआ। 16-6-1978 की शाम को राजकोट के मंदिर में आयोजित सम्मान समारोह में स्वामीजी रात को अपने आवास पर राजकोट के राजवी, जिला पंचायत अध्यक्ष, शहर के मेयर सहित कई गणमान्य व्यक्तियों का सम्मान स्वीकार कर रहे थे। स्वामीजी पत्रलेखन कर रहे थे तब उस बुनकर भाई ने स्वामीजी के पास पहुंचकर वंदन किया और बोले कि मेरा बुनाई का धंधा है। मैं वॉशक्लॉथ, स्कार्फ, तौलिये आदि बनाता हूं। साथ ही माल की बिक्री में बहुत ही बाधा उत्पन्न होती है। मैं बहुत दु:खी हूं। इसलिए मैं आपका आशीर्वाद लेने आया हूं। आपके आशीर्वाद से मैं ठीक हो जाऊंगा।

दु:ख के इन शब्दों में दर्द और विश्वास दोनों फूट रहे थे।

उनकी बात सुनकर स्वामीजी एक क्षण के लिए उनकी ओर देखते रहे। फिर उन्होंने संतों से कहा कि हमारे सत्संगी रामजीभाई लिम्बडी में हथकरघा कपड़े का व्यापार करते हैं। आइए, इस पर अनुशंसा पत्र लिखें।

यह कहकर रात के ग्यारह बजे स्वामीजी ने एक अज्ञात बुनकर के जीवन से अंधकार को दूर करने के लिए लिखना शुरू किया।

इस करुणा ने उस व्यक्ति का हृदय भर दिया। उन्होंने स्वामीजी को एक बिना बिकी धोती दी जो उनके पास थी। स्वामीजी ने वह धोती ली, लेकिन उसे पहनने के लिए नहीं, आशीर्वाद लिखने के लिए। जैसे कि बुनकर के विधि के लेख को फिर से लिखते हों! स्वामीजी ने धोती पर हस्ताक्षर किए और योगीस्वरूपदास स्वामी से सिफारिश की कि इसे भोजन कराकर भेजिएगा।

भोजन पर बैठा वह व्यक्ति स्वामीजी के स्नेह को चूमता रहा। उसने संतों से गीली आँखों से कहा कि आज मेरा हाथ भगवान ने थाम लिया है। मेरा काम हो गया।

यह बुनकर पीड़ा और विश्वास के साथ स्वामीजी से मिलने आया था लेकिन मिलने के बाद अब विश्वास कायम है; दर्द चला गया। यह स्वामीजी का कार्य था - प्रजा के कष्टों को मिटाना, प्रजा के विश्वास को बनाए रखना।

पत्र लेकर वह स्वामीजी द्वारा दिए गए पते पर गया और सत्संगी से मिला। उस हरिभक्त ने स्वामीजी के पत्र के कारण इस अजनबी का माल खरीदा। साथ ही इस व्यक्ति का दुर्भाग्य चकनाचूर हो गया और उसकी आजीविका चलने लगी।

गणमान्य व्यक्तियों के प्रतापी सम्मान को स्वीकार करने के कुछ ही मिनटों के भीतर स्वामीजी द्वारा एक बुनकर के दर्द को दूर करने के लिए की गई देखभाल को देखकर सभी का दिल उनके चरणों में लुढक गया।

ऐसी घटना घटी 28-2-1984 को। इस दिन स्वामीजी ने नवसारी के हरिजन भाइयों की बस्ती ठक्करबापा वास में नूतन संस्कार भवन का भूमिपूजन किया और कुदाल के पांच अंक दिए। तो हरिजन भाई बहुत खुश हुए। इस अवसर पर आयोजित बैठक में इस जाति के विभिन्न सामाजिक संगठनों की ओर से स्वामीजी को माल्यार्पण किया गया। स्वामीजी ने जब वे सभी

पुष्पमालाएँ उन्हें लौटा दीं, तो वे सभी अभिभूत हो उठे, क्योंकि उन्हें इस प्रकार सम्मानित करनेवाले स्वामीजी पहले महापुरुष थे! हरिजनवास के इस कार्यक्रम के समापन के बाद वे अंबाजी मंदिर पहुंचे और यहां आरती की और सभी को आशीर्वाद दिया।

5-2-1985 की सुबह भोज गाँव में प्रात: काल की पूजा के बाद जब स्वामीजी गांव के महादेव मंदिर पहुंचे तो गांव के कुछ हरिजनों ने उन्हें अपनी बस्ती में आने का न्यौता दिया। इसे तुरंत स्वीकार करते हुए स्वामीजी मंदिर से सीधे हरिजन वास में गए। यहां वे हरिजन भाइयों के बीच एक बेंच पर बैठ गए और आपस में बातें करने लगे। स्वामीजी ने कहा कि 'किसी भी जाति के लोग हों लेकिन अच्छे कर्म करते हैं सभी अच्छे होते हैं। भले ही शबरी, रोहिदास आदि निम्न कुल में जन्म लिए थे, फिर भी यदि वे भगवान द्वारा दिए गए नियमों का पालन और भक्ति करते थे, तो उनके नाम शास्त्रों में लिखे गए हैं। आप सभी में दिलचस्पी रखनेवाले ईमानदार लोगों से मैंने सुना है कि आपमें से कुछ लोग कई तरह के व्यसनों से गुज़र रहे हैं। देखो, तुम्हारे घर की छतें अभी ऊँची नहीं हैं। आप सभी आर्थिक रूप से आगे नहीं बढ़ सके हैं। हमें ऐसा जीवन जीना चाहिए जहां हम अपना सिर ऊंचा रख सकें। दारू, बीड़ी छोड़ेंगे तो आपका आत्मविश्वास बढ़ेगा और आपका पैसा बचेगा। कोई और उस पैसे को लेनेवाला नहीं है, वे आपके ही घर में रहनेवाले हैं। लेकिन गिनती नहीं करते हुए जीवन को व्यर्थ गंवा देते हैं। फिर सोचते हैं कि हमारी तरक्की क्यों नहीं होती? लेकिन कहां से हो?

''संस्कार अच्छे न हों तो चाहे कोई भी धनी हो या कोई राजा हो उसका घर भी बर्बाद हो जाता है। दूसरी ओर, भले सामान्य हो, झोंपड़ी में रह रहा है लेकिन व्यसन नहीं रखता है वह तो काबिले तारीफ है। पूरा गांव इसे सम्मान की नजर से देखेगा। आपके पास संस्कार हैं, लेकिन आपको उन्हें बाहर लाना होगा। यह ठाकुरजी, तुम्हारे घर आए हैं, उनमें विश्वास रखो। हम सभी हिंदू हैं, चाहे जैसी भी जाति के क्यों न हों!''

आज स्वामीजी की प्रेरणा से सब अभिभूत हो उठे। इसमें स्नान करनेवाले कुछ हरिजनों ने व्यसन छोड़ने और नियमित भक्ति करने के नियम अपनाए। तो उनको ऐसा हो रहा था कि जैसे घर बैठे तीर्थ!!

इस प्रकार स्वामीजी 2-4-1980 की रात को विद्यानगर में अरविंदभाई पटेल के घर पधारे। जब वे यहां आए तो आशी के बुनकर रामजी बगीचे में काम कर रहा था। इसे देखते ही स्वामीजी ने उसे अपने पास बुला लिया, लेकिन वर्णाश्रम धर्म प्रणाली के अनुसार उसके पास आते ही वह सिकुड़ गया। हालाँकि, स्वामीजी ने उसे बुलाया और उसके सिर पर हाथ रखा और कहा कि तुम्हें हमारे करीब आना चाहिए। कोई बाधा नहीं है।

स्वामीजी की कृपा से उस बुनकर का कण-कण नाच उठा। जिसे समाज अछूत मानता था, उसे स्वामीजी गले लगाते थे।

इसके अलावा, जब वे खाने के लिए बैठे, तो उन्होंने रामजी को उनके सामने खानेवाले हरिभक्तों की पंक्ति में भी बिठाया और उसे आम का रस परोसा। यह अनुभव रामजी के लिए नया था, लेकिन स्वामीजी ने उसे उच्च ज्ञाति की माला में स्थापित कर समाज में ब्रह्म हमारी जाति है का संदेश फैलाया।

उन्होंने सवर्णों में एक समझ पैदा की ताकि वे अन्य जातियों को स्वीकार करने में संकोच न करें और अन्य जातियों के मनुष्यों को ऐसे अच्छे शिष्टाचार सिखाएं कि उन्हें सवर्णों में सहज रूप से स्वीकार किया जाए। स्वामीजी ने सत्संग के समाधान से जातियों के बीच के विद्वेष को धो दिया ताकि उनका संप्रदाय मनुष्यों के लिए एक मीठा घोंसला बन गया! उनकी यह क्रांति रक्तरंजित हुए बिना लाभकारी सिद्ध हो रही है, क्योंकि इसमें किसी भी समूह के प्रति आक्रामकता, पूर्वाग्रह या घृणा नहीं थी, बल्कि सभी के प्रति करुणा थी।

कवीठा गांव में उनकी करुणा का एक नया अध्याय खुला। 8-5-1985 को यहां पहुंचे स्वामीजी के आगमन से गांववालों को जितनी ही खुशी हुई, इससे अधिक आशी गांव वाले रामजी को हुई। क्योंकि इस भक्त ने अपनी पुत्री के विवाह के सम्बंध में स्वामीजी की उपस्थिति का मनोरथ किया था कि, इस विवाह के अवसर पर स्वामीजी निकटतम गाँव में हों तो बेहतर होगा, ताकि हम उनका आशीर्वाद लेने जा सकें।

ऐसी कामना करते समय उसके मन-मस्तिष्क में बोचासन

के पास का कोई गांव कल्पना में था। लेकिन स्वामीजी, जो भक्तों के संकल्पों को पूरा करने की प्रकृति रखते हैं। अपनी बेटी की शादी की तारीख को ही वह कवीठा आए, जो कि उसके गांव के बहुत करीब था, और रामजीभाई स्वामीजी के पास पहुंचे।

9-5-1985 की सुबह जब स्वामीजी प्रात: भ्रमण कर रहे थे, तो उन्होंने इस भक्त को देखकर पूछा कि रामजी! तुम क्यों आए?

'बापा! आज मेरी बेटी की शादी है।'

यह सुनकर स्वामीजी उस बुनकर को अपने साथ भ्रमण में रखकर पूछने लगे कि तेरी जाति में देने और लेने की प्रथा क्या है? दामाद को क्या दिया जाता है? बेटी को क्या देते हैं? तुम्हारे पास कितना है? शादी में कितने लोग आ रहे हैं? कौन सी जाति आएगी? उन सभी को भोजन कराने के लिए क्या किया है? किचन में क्या पकाया है? मिठाई में क्या है? क्या तुम पत्तल मँगवाए लाए हो?...

उपरोक्त प्रश्नावली के माध्यम से स्वामीजी एक बुनकर की इतनी सूक्ष्मता से देखभाल कर रहे थे कि एक रिश्तेदार भी इसे नहीं कर सकता था। जब यह पूछताछ हो रही थी, तब स्वामीजी की सांसें बढ़ती जा रही थीं, लेकिन हरिभक्त को गर्मजोशी देने में डूबे स्वामीजी इस समस्या के प्रति काफी उदासीन हो गए थे।

उनके प्यार के इस प्रवाह में उस बुनकर भक्त की आंखें गीली हो गईं। लेकिन उनमें भी वह अधिक गद्‌गद तब हुआ जब स्वामीजी ने कहा कि रामजी! मुझे आज मीटिंग के लिए अहमदाबाद पहुंचना है, नहीं तो मैं लग्न में उपस्थित हो सकता था। फिर भी मैं वरिष्ठ संतों को भेज रहा हूं।

23-11-1985 को एक सामूहिक विवाह का आयोजन किया गया था। पूर्व उपाध्यक्ष श्री बी. डी. जट्टी, वित्त राज्य मंत्री श्री अरविन्द सांघवी आदि भी उपस्थित थे। ब्राह्मणों से लेकर हरिजनों तक सभी जातियों के युवक-युवतियों को एक मंडप के नीचे दबदबा होते देख वे चकित रह गए। स्वामीजी द्वारा विकसित ऐसी सामाजिक एकता और चेतना के साथ सामूहिक विवाह की सराहना करते हुए वित्तमंत्री ने कहा कि दहेज के बड़े प्रदूषण पर अंकुश लगाने की बात तो बहुत होती है, लेकिन इसे लागू करने का श्रेय भगवान श्रीस्वामिनारायण तथा परम पूज्य स्वामीजी को ही जाता है। यहां प्रमुखस्वामीजी महाराज ने कई जातियों के युवक-युवतियों को बड़ी संख्या में एक साथ लाकर बहुत अच्छा काम किया है।

3-1-1986 की सुबह जब गजेरा के बुनकर भाइयों की प्रार्थना स्वीकार कर उनकी कालोनी में पधारे तो सभी जातिभाई इस कृपा से झूम उठे। मना करने के बावजूद वे ढोल बजाकर स्वामीजी को कपड़े की चट्टानों पर चलाते हुए गांधी मंदिर ले आए। रास्ते भर बुनकर कपड़े की एक पट्टी में बस गए। उस पर प्रसन्नता जताते हुए स्वामीजी ने स्वागत सभा में उन्हें सभी सद्गुणों की शिक्षा दी। इस प्रवचन के बाद वे सभी से व्यक्तिगत रूप से भी मिले। इतना ही नहीं, उन्होंने अपने साथी संतों और शिष्यों को इन बुनकरों के घर-घर जाकर नशा करने वालों को नशों से मुक्त करने की आज्ञा दी।

नशामुक्ति आंदोलन स्वामीजी के लिए एक सामयिक परियोजना नहीं थी, बल्कि एक स्थायी परियोजना थी। तो आज उन्होंने एक पाटनवाडिया हरिजन से कहा कि शराब पीने से पुलिस से छुटकारा मिल सकता है लेकिन भगवान से नहीं। ईश्वर पर भरोसा रखो। उसका काम ऐसा है कि आपका शराब पीने का मन नहीं होगा। शराब देखकर आपको ऊब का अहसास होगा। यदि कभी शराब पीने का मन हो जाए तो कंठी का स्पर्श कर लेना।

इस प्रकार हजारों हरिजनों को व्यसनों से मुक्त करनेवाले स्वामीजी का समाज पर इतना ऋण है जिसकी गिनती नहीं की जा सकती।

8-6-1986 को स्वामीजी सांकरी क्षेत्र में पधारे। यहाँ की आबादी में मुख्य पटेल हैं, लेकिन अधिकतर हलपति दुबला भी हैं। वे पटेल की जमीन में काम करके अपना जीवन यापन करते हैं। लेकिन उनमें से ज्यादातर शराब में डूबे रहते हैं। चूंकि शिक्षा के प्रति कोई विशेष लगाव नहीं होने से संतति और छतों की प्रगति का विचार कहां से आए?

इनमें से कुछ दुबले 9-6-1986 की रात मंदिर के सामने बंगले के बाहर दरवाजे के समानांतर दो पालियों पर बैठकर बातें कर रहे थे। उस समय वहां से गुजरते हुए स्वामीजी उन्हें देखते ही रुक गए। सभी को जोर-जोर से जय स्वामिनारायण कहा।

उनकी आवाज सुनकर हलपतियों ने स्वामीजी की ओर देखा। इस समय ठीक तीन घंटे पहले स्वामीजी के दाहिने पैर पर फोड़े को तोड़कर पट्टी बांध दी गई थी। तो पैरों में दर्द हो रहा था लेकिन दर्द की गिनती न करते हुए वे खड़े हुए बोलने लगे-

''आप सभी को इस मंदिर में प्रतिदिन दर्शन करना चाहिए। किसी भी व्यसन से छुटकारा पाएं। यदि आप पैसे बचाते हैं, तो भवन बेहतर होगा। लड़के अच्छे कपड़े पहनेंगे और पढ़ाई में लगे रहेंगे। हम आपसे पैसे नहीं मांगते। तुम मंदिर आओ और सत्संग करो। यह मंदिर सिर्फ पटेलों का ही नहीं, आपका भी है। गांव में एक कौम फायदा उठाएं और आप लोग

इस लाभ से वंचित रह जाए! इसलिए हम आपको बताते हैं।

इस प्रकार पंद्रह से बीस मिनट तक स्वामीजी अँधेरे में फंसे लोगों का मार्ग रोशन करते रहे।

लेकिन उनका काम यहीं नहीं रुका। उन्होंने संतों को आज्ञा दी कि जब तक हम यहां हैं, तब तक इन गरीबों की झोपड़ियों में जाओ, और उन्हें उनके व्यसनों से मुक्त करो।

उनके इस आदेश के अनुसार जैसे-जैसे संत घर घर गए, सभी को सच्ची समझ मिलने लगी। इसलिए हर दिन 25-50 लोग व्यसन छोड़ने को तैयार हो गए। शाम को उन्हें स्वामीजी के पास लिवाया जाता था। स्वामीजी बलपूर्वक बात करने लगे कि संत में कोई भेदभाव नहीं है। आप लोग मुंह में शराब, मांस न डालें, जुआ छोड़ दें वह हमारे लिए एक बड़ी सौगात है। आपके लड़कों को उकाई में हमारे गुरुकुल में रखेंगे। सारा खर्चा हम उठाएंगे। पढाएंगे। पढ़ेगा तो आगे आएगा।

इस प्रकार स्वामीजी के प्रवास के दौरान सांकरी क्षेत्र में समाज सुधार का यज्ञ हो गया। इसमें 396 हलापति निर्व्यसनी हो गए और 139 हलापति ने नैतिक नियम अपनाए।

स्वामीजी ने 17-6-1986 को करुणामयी वर्षा की। सांकरी मंदिर का 15वां पाटोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर उन्होंने सभी सवर्णों, पटेलों, चरवाहा, हलपतियों, हरिजनों आदि को भोजन कराया। इसलिए, व्यसनों का त्याग करवाकर फल और मिठाई खिलाकर उच्च जीवन देनेवाले स्वामीजी में सभी ने अपना हृदय खो दिया।

इसीलिए एक हरिजन स्त्री ने एक हरिभक्त के माध्यम से स्वामीजी को अपनी गरीबी का पत्र भेजा। उसे पढ़ने के बाद स्वामीजी ने तुरंत मंदिर के प्रबंधक प्रभुस्वरूपदास स्वामी को निर्देश दिया कि हमें ऐसे लोगों को नियमित रूप से भोजन आदि देना चाहिए।

मदद करने में भी स्वामीजी के मन में सब समान थे। फिर चाहे बाई हो या भाई, हलपति हो या धनपति। इसलिए इस प्रवास के पूर्ण होने पर स्वामीजी के जाने के समय उन लोगों की आंखें डबडबा गईं।

21-9-1986 को सारंगपुर में शास्त्रीजी महाराज का स्मृति पर्व होने के कारण, स्वामीजी ने भारी मात्रा में खीर पकाई। सारंगपुर एवं आसपास के गांवों के देवी पूजक और गांव के किनारे रहनेवाले हरिजन भाइयों को उनकी कृपा के इस वर्षा में नहीं छोड़ा गया था। भले ही वे मंदिर नहीं आए, स्वामीजी ने प्रबंधकों को निर्देश दिया कि वे हरिजनवास में सभी को खीर का प्रसाद वितरित करें। देवीपूजकों को भी खीर भोजन कराएं।

2-3-1987 की सुबह रामोदडी गांव के नवनिर्मित मंदिर में अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की प्रतिष्ठा की गई। तब स्वामीजी गाँव में देवी-पूजकों के बाघरीवास में पहुँचे। यहां रहनेवाले 60 परिवारों में नशा छोड़ने और माला पहनने की हिम्मत जताई थी। तो स्वामीजी के आगमन पर सभी ढोल-शहनाई बजाई। स्वागत को स्वीकार करते हुए नीम के नीचे बने मंडप में विराजमान स्वामीजी ने कहा कि ईश्वर सर्वशक्तिमान हैं। सभी को अपने दर्शन, भजन करने का अधिकार है। अत: अंधविश्वास को दूर करें। अक्सर ऐसा होता है कि बुखार होने पर हम जानवर को नहीं मारेंगे तो माँ को गुस्सा आएगा, लेकिन माँ को गुस्सा नहीं आता। माँ अपने ही बच्चों को मारती है क्या? वह तो दयालु होती हैं। यह बच्चों को बड़ा बनाती हैं। इसलिए निर्दोष को मारने की कोई जरूरत नहीं है। लोगों के बीच एक कहावत है कि बाघरी वैष्णव नहीं होता है। लेकिन आप ऐसा सत्संग करें ताकि यह कहावत गलत हो जाए।

इस आशीर्वाद के बाद स्वामीजी ने सभी पर जल छिड़का और सभी को व्रतमान दिए। उसके बाद वे नार और पेटलाद को लाभ पहुँचाते हुए विद्यानगर पहुँचे। यहां मशहूर एलिकॉन कंपनी के मालिक श्री भानुभाई के घर पर रिसेप्शन का आयोजन किया गया था। बंगले का विशाल प्रांगण श्रेष्ठीजनों से भर गया था। स्वामीजी के लिए एक सुंदर सिंहासन तैयार किया गया था, जो फूलों की माला और नरकट की कलात्मक पृष्ठभूमि से सुशोभित था। जब स्वामीजी ने उस पर अपना स्थान ग्रहण किया, तो उनके मुखरविंद पर वही खुशी चमक रही थी, जो आज दोपहर रामोदडी की देवीपूजक बस्ती में एक पेड़ के नीचे बैठे उनके चेहरे पर थी।

6-7-1987 की सुबह अहमदाबाद के मेघानीनगर में गणपत सोसायटी द्वारा स्वामीजी का स्वागत किया गया। इस

कॉलोनी में हरिजन बंधुओं के स्वागत के लिए नगर उपमहापौर गोपालभाई सोलंकी, सांसद डाह्याभाई परमार, पूर्व विधायक देवजीभाई परमार सहित कई गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे। उनका स्वागत करते हुए स्वामीजी ने उन्हें आशीर्वाद दिया और कहा कि ''भगवान के मन में कोई मतभेद नहीं है, लेकिन कुछ विकृतियों के कारण जाति के मतभेद पैदा हो गए हैं, तो हमारा धर्म खंडित हो गया। लेकिन आप में और हम में केवल एक ही ईश्वर बिराजमान है। हर आदमी को अपने धर्म को नहीं समझने पर लड़ने की कोशिश करता है। लेकिन अगर यह आंतरिक संघर्ष टूट जाता है, तो दुनिया में कोई ताकत नहीं है जो हमें कुछ भी कर सके। घर का क्लेश अधिक कष्टदायक होता है। इसलिए आंतरिक संगठन का होना आवश्यक है। भगवान श्रीस्वामिनारायण और उनके संतों-परमहंसों ने कई कठिनाइयों के बावजूद यह कार्य किया है। हम सब ईश्वर की संतान हैं। तो कौन सवर्ण नहीं है?''

इस सरल भाषा में फैले स्वामीजी के विचारों की महिमा से सभी प्रभावित थे। एक आयकर अधिकारी श्री आत्मारामभाई ने मंच पर कहा, ''मैं अपने जीवन में अपनी शादी से ज्यादा खुश कभी नहीं रहा, यह आज एक विशेष खुशी है।''

इसी खुशी के साथ स्वामीजी 10-11-1987 की सुबह वल्ली पहुंचे। हालांकि, तलपड़ा पटेल, हरिजन, कोली आदि ने सूखे के दिनों में चारा लगाने के लिए लगभग 350 वीघा भूमि बी.ए.पी.एस संगठन को सौंप दी।

गरीब लोगों की इस अमीरात को देखकर स्वामीजी ने सभी को आशीर्वाद दिया और कहा, ''इस गांव की आबादी भले ही सामान्य है, फिर भी आप सत्संग और धर्म के मामले में असामान्य हैं। आपने जमीन बोने के लिए दी वह कोई छोटी बात नहीं है।''

इस आशीर्वाद के बाद एक के बाद एक भूमिदान करनेवालों के नाम पुकारे जाने लगे। उस आदेश के अनुसार सभी स्वामीजी के पास आने लगे। इसमें अंतिम दो नामों का उल्लेख था - भगाभाई और रत्नाभाई। दोनों हरिजन थे। दोनों ने एक बीघा जमीन घास लगाने के लिए दी थी, लेकिन स्वामीजी के पास नहीं आए क्योंकि वे मौजूद नहीं थे। तो सभा के बाद, स्वामीजीने, जो उदेसंगभाई के ओसारी में सायंभोजन के लिए बैठे थे, तब निवाला अपने मुंह में निगलने से पहले गुणनिधिदास स्वामी से कहा कि आखिरी दो नाम घोषित किये उनको बुलाओ। हम उनसे मिलना चाहते हैं। उसके बाद हम खायेंगे।

इतना कहकर स्वामीजी दो हरिजन भाइयों की प्रतीक्षा करने लगे! लेकिन जब उन्होंने सुना कि वे किसी कार्य निर्मित दूसरे गांव में गए हैं, तो स्वामीजी ने खाना शुरू किया। फिर भी उन्होंने दोनों भाइयों को चार बजे बुलाने का निर्देश दिया - 'मैं उनसे खास तौर पर मिलना चाहता हूं।'

तदनुसार जब हरिजन बंधु सायंकाल के चार बजे आए, तो उन्हें प्रेमपूर्वक आशीर्वाद देते हुए स्वामीजी ने कहा कि आपने बहुत अच्छा काम किया है। सेठिया लाख देते हैं, और आप एक रुपया देते हैं तो दोनों का समान पुण्य है। भगवान आपको बहुत ही लाभ पहुंचाएंगे।

इतना कहकर स्वामीजी भी हरिजन बंधुओं की भूमि देखने के लिए पधारे।

स्वामीजी की कृपा वर्षा से सत्संग की हरियाली उन भाइयों के जीवन के खेतों में फैल गई। उन्होंने सदाचारी जीवन व्यतीत किया।

इस शैली को जीवित रखने के लिए स्वामीजी ने संस्था के सहयोग से अडास गांव के हरिजनवास में एक मंदिर भी बनवाया। इसमें 3-2-1988 को हनुमानजी की मूर्ति प्रतिष्ठा की।

उसी तरह स्वामीजी 3-5-1990 की शाम को जंजारका के सवगुणनाथ मंदिर पहुंचे। हरिजन भाइयों के इस महातीर्थ में महंत श्री बलदेवदासजी ने वाणी के पुष्पों से उनका अभिनन्दन किया और कहा कि हमारे बड़े भाग्य हैं कि आपके कदम यहां पर पड़े हैं! आपका स्वागत है।

इस अवसर पर स्वामीजी ने भी हरिजन समुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि कोई भी आत्मा किसी भी जाति में जन्म से पतित नहीं होती है। सभी को मोक्ष का अधिकार है।

ऐसा ही एक अनुकरणीय कदम स्वामीजी ने 13-5-1990 को उठाया था। इस दिन बोचासन मंदिर में आयोजित दलित सम्मेलन में खेड़ा, पंचमहल और वडोदरा जिले के दो सौ गांवों के लगभग 1500 हरिजन भाई एकत्रित हुए थे। इस आयोजना में संस्था द्वारा दिये गये सहयोग को देखकर विश्व हिन्दू परिषद के प्रान्तीय उपाध्यक्षश्री डाह्याभाई शास्त्री ने कहा कि जब तक प्रमुखस्वामीजी जैसे संत हैं, तब तक वीरता, धैर्य और सज्जनता का अकाल नहीं होगा। आज यह सौभाग्य की बात है कि एक पवित्र चरणों में स्वामी रामदास, प्राणनाथ और चाणक्य के दर्शन हो रहे हैं।

इस मौके पर स्वामीजी ने भी कहा, 'हिंदू धर्म में पहले से कोई भेदभाव नहीं था। उन्होंने संसार को एक परिवार मानकर आदेश दिये हैं। हिंसा को बढ़ावा देनेवाले धर्म को धर्म नहीं कहा जाता। इसका कोई श्रेय नहीं है। आत्म-सहनशीलता ही

सच्चा धर्म है। हिंदु धर्म ने कभी ज़बरदस्ती धर्म परिवर्तन नहीं किया है, यह कभी धर्म परिवर्तन कराता ही नहीं है। इसलिए हमें अपने धर्म के महत्व को समझने की जरूरत है।'

इस सदबोध के साथ संपन्न हुए पहले सत्र के बाद सभी हरिजन भाइयों ने मंदिर में ही महाप्रसाद लिया। उसके बाद शुरू हुए दूसरे सत्र में भी मौजूद स्वामीजी ने अंत में सभी को व्यक्तिगत आशीर्वाद का लाभ दिया। जब हरिजन समाज में आयोजित भजन प्रतियोगिता के विजेताओं को संस्था की ओर से पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया तो स्वामीजी की उदारता और समानता की प्रतिध्वनि गूंज उठी।

28-1-1992 की सुबह सारंगपुर में नाश्ता करने के बाद स्वामीजी सभी को मिलते थे। उस समय मंदिर में काम करनेवाले दो हरिजन भाई दूर खड़े होकर दर्शन कर रहे थे। उनकी ओर देखते ही स्वामीजी ने कहा कि आओ।

'बापा! हम झाडू लगाने जा रहे हैं।'

लेकिन आग और आकाश में भेदभाव नहीं है। ठीक वैसे स्वामीजी, अग्नि के समान पवित्र और आकाश के समान असंग थे। उन्होंने दो हरिजनों को अपने पास बुलाया और उन्हें आशीर्वाद दिया।

जब स्वामीजी ने हरिजनों से, जो इस अनुग्रह वर्षा से उत्साहित थे, अपनी बीड़ी की लत छोड़ने के लिए कहा, तो उन्होंने कहा कि 'स्वामीजी, अभी सबकुछ छोड़ देंगे। क्योंकि आपने हमें आपके पास रखा है!'

हां, स्वामीजी ने हरिजनों को इस निकटता का अनुभव कराया है।

1-11-1991 को भादरा में देवी-पूजकों के प्रत्येक घर स्वामीजी ने पधरावनी की। इस बीच, एक भाई की पहचान कराते हुए, एक स्थानीय कार्यकर्ता ने कहा कि इसने मोरों और खरगोशों को मारकर सीम को खाली कर दिया है।

यह सुनकर स्वामीजी ने उस देवी-पूजक को उपदेश दिया कि भाई! हमें ऐसा नहीं करना चाहिए। यदि कभी रोटी न मिले तो हमारे मंदिर में आ जाना, लेकिन जानवर को कभी नहीं मारना।

इस प्रकार एक देवी-पूजक के जीवन में परिवर्तन कराते हुए स्वामीजी नडियाद पधारे। नडियाद में नवनिर्मित अक्षर-पुरुषोत्तम छात्रावास का उद्घाटन समारोह 23-11-1991 को आयोजित किया गया था। इस अवसर पर भूमिदान में विशेष सहयोगी श्री नरेन्द्रभाई देसाई, स्थानीय व्यवसायी श्री इंदुभाई पटेल आदि का सम्मान किया गया, लेकिन जब आयोजक देवी-पूजक श्री जलूभाई के बारे में भूल गए, तो स्वामीजी ने प्रबंधकों का ध्यान आकर्षित किया। बेशक, भले ही इस व्यक्ति ने बिक्री से जमीन दी हो, लेकिन स्वामीजी किसी को भी नहीं भूलते।

18-2-1992 को अटलादरा में बिराजमान, उन्होंने एक भक्त को आशीर्वाद दिया और यह कहकर उनकी पहचान की कि यह सोखडा का मंगल है। योगीबापा के आशीर्वाद से सत्संग हुआ, बाकी उड़ते पंछी गिराता था।

इतना कहकर स्वामीजी ने आँखों पर हाथ फेरते हुए पूछा कि अभी तो सही दिख रहे हो न?

अपनी ऐसी संभाल लेनेवाले स्वामीजी के प्रति वह कृतज्ञता से विभोर हो गया।

15-12-1992 की सुबह इसणाव पहुंचे। यहां नए मंदिर में अक्षर-पुरुषोत्तम महाराज की प्रतिष्ठा उनके हाथों से संपन्न हुई। बाद में सभा में भाग ले रहे थे, तो पास के पिपलाव गाँव के दो-चार देवी पूजक वहां आए और बोले कि - 'बापा! हमारे घर में हर साल एक भैंसे की बलि दी जाती है। छोटे-बड़े मौकों पर बलि के लिए बकरियों की संख्या आठ से दस तक बढ़ जाती है। यदि इस सभा के बाद तुम्हारे पांव गिरे, तो भूमि पवित्र हो जाएगी।'

बीमारी से पीड़ित स्वामीजी के लिए इस कार्यक्रम में शामिल होना उचित नहीं था, क्योंकि उनके शरीर में कल रात से ही खांसी बुखार आ रही थी। इसलिए वे तीन बजे तक सो नहीं सके। बहरहाल, ईसणाव में सभा और भोजन में शामिल होने के बाद दोपहर डेढ़ बजे पिपलाव पहुंचे!

यहां संतों ने उनको गाड़ी में बैठे रहने का अनुरोध किया, लेकिन स्वामीजी ने उतरकर देवी पूजकों की पुष्पांजलि स्वीकार की। उसके बाद खड़े होकर आशीर्वाद दिया कि संत यहीं रहेंगे।

(शेषांश पृष्ठ 33 पर)

तीर्थधाम अटलादरा में दिव्य सत्संग का लाभ देते परम पूज्य महंतस्वामीजी महाराज

हाल ही में 29-10-2021 से 2-12-2021 तक परम पूज्य महंतस्वामीजी महाराज ने गोंडल में बिराजमान होकर सभी को अक्षर के रंग से रंग दिया। लगातार 35 दिनों तक स्वामीजी ने आध्यात्मिकता के दिव्य आंदोलन का प्रसार किया और सभी को आध्यात्मिक ऊर्जा से जगाया। यहाँ से विदा लेते हुए स्वामीजी 2-12-2021 को अटलादरा-वडोदरा पहुंचे। गोंडल से अटलादरा पहुंचने से पहले, परम पूज्य महंतस्वामीजी महाराज ने राजकोट में बी.ए.पी.एस मंदिर का दर्शन किया। यहां दर्शन के लिए आए हरिभक्तों के साथ-साथ स्थानीय संतों को दर्शन का लाभ देने के बाद, स्वामीजी अक्षरपुरुषोत्तम महाराज के साथ देर शाम हवाई जहाज से अटलादरा पहुंचे, तो सभी ने हरि-गुरु का गर्मजोशी से स्वागत किया। हरि-गुरु के आगमन के अवसर पर, कई संतों-हरिभक्तों ने विभिन्न तपस्या-भक्ति की।

मध्य गुजरात के अलग-अलग प्रांतों से मुमुक्षु गुरुहरि के पास आ रहे थे। ये सभी मुमुक्षु ठाकोरजी और साथ ही स्वामीजी के दर्शन-आशीष प्राप्त कर के धन्य हुए। मंदिर के सामने विशाल मैदान में बने यज्ञपुरुष सभागृह में स्वामीजी की प्रातः कालीन पूजा और विभिन्न अवसरों की स्मृतियों को देखने का लाभ सभी के लिए यादगार बनता जा रहा था। पूजा में संगीतकार संत-युवाओं ने भजन गाकर वातावरण में अनेरी दिव्यता का संचार किया। पूजा के बाद स्वामीजी ने सुबह कथामृत से सभी को ब्रह्मानंद में डूबो दिया। स्वामीजी के प्रवास के दौरान कई संत-हरिभक्तों ने विशेष भक्ति, सेवा, उपवास, तपस्या और समर्पण के माध्यम से गुरुहरि का सुख प्राप्त किया। स्वामीजी की अपार प्रसन्नता दूर-दूर से पैदल चलकर आए हुए सभी पदयात्रियों पर बरस पड़ी।

शाम को सभागार में आयोजित सत्संग सभाओं में आध्यात्मिक कार्यक्रमों के साथ-साथ विद्वान संतों के प्रेरक प्रवचनों और स्वामीजी के आशीर्वाद से कई भक्त लाभान्वित हुए। कोरोना महामारी के कारण, अटलादरा मंदिर के तत्वावधान में कार्यरत विभिन्न सत्संग केंद्रों के हरिभक्तों और गणमान्य व्यक्तियों ने कोविड नियमों को ध्यान में रखते हुए संतों की योजना के अनुसार अलग-अलग दिनों में स्वामीजी के दर्शन और आशीर्वाद प्राप्त किए।

अटलादरा में अपने प्रवास के दौरान 3-12-2021 को स्वामीजी ने अटलदरा में नवनिर्मित यज्ञपुरुष संत आश्रम का औपचारिक उद्घाटन किया। तत्पश्चात् श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज को कक्षों में ले जाकर स्वामीजी ने प्रासादिक पुष्प छिड़के।

ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामीजी महाराज की 100वीं जयंती के अवसर पर, स्वामीजी ने 7 से 11 दिसंबर, 2021 तक आयोजित प्रमुखपर्व के तहत चाणसद और अटलादरा में भक्ति कार्यक्रमों में दिव्य आध्यात्मिक लाभ दिया। इस जन्मोत्सव में कोई बाधा उत्पन्न नहीं हो इस लिए स्वामीजी ने अटलादरा-चाणसद में गिरनेवाली बारिश को रोकने और जन्मोत्सव को बेहतरीन तरीके से मनाने के लिए गोंडल से मालाजाप-प्रार्थना शुरू की। इस प्रार्थना की महिमा और उनके आशीर्वाद से प्रमुखपर्व के सभी कार्यक्रम सुचारु रूप से संपन्न हुए। महोत्सव के अंतिम दिन वर्चुअल के माध्यम से प्रमुखस्वामीजी महाराज की 100वीं जयंती शानदार तरीके से मनाई गई।

हाल ही में अफ्रीकी महाद्वीप के 16 देशों से बी.ए.पी.एस सत्संग दीक्षा मौखिक प्रतियोगिता सत्संग केन्द्रों द्वारा आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता के विजेताओं का अभिनंदन समारोह 17-12-2021 को स्वामीजी के तत्वावधान में ऑनलाइन आयोजित किया गया था। वीडियो कॉन्फरन्स के माध्यम से आयोजित सत्संगदीक्षा प्रतियोगिता अभिनंदन समारोह में प्रतिभागियों ने स्वामीजी को अपना परिचय दिया और गुरुहरि के हृदय का आशीर्वाद प्राप्त किया। आज के समारोह में स्वामीजी ने विजेता प्रतियोगियों पर पुरस्कारों की वर्षा की। स्वामीजी ने प्रेम से विजयी प्रतियोगियों की

फोटो और प्रतियोगिता में भाग लेनेवाले सभी प्रतियोगियों की सूची पर हाथों से स्पर्श किया।

16-12-2021 से 14-1-2022 के दौरान धनुर्मास के अवसर पर परम पूज्य महंतस्वामीजी महाराज ने धर्मशास्त्र की शिक्षा दी और सभी को अध्यात्म की शिक्षा दी। परम पूज्य महंतस्वामीजी महाराज के पास ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामीजी महाराज की शताब्दी मनाने के लिए इतनी ऊर्जा है! क्या खुशी है! उनके दर्शन इस धर्मशास्त्र के सभी पाठों में देखे गए। गुरुहरि प्रमुखस्वामीजी महाराज के प्रति उनकी अनूठी भक्ति स्वामीजी द्वारा दिए गए इन प्रत्येक पाठ में परिलक्षित होती थी।

अटलादरा में परम पूज्य महंतस्वामीजी महाराज का प्रवास केवल एक महीने के लिए निर्धारित किया गया था। हालांकि, कोरोना की मौजूद स्थिति के कारण, अटलादरा में बी.ए.पी.एस मंदिर फिलहाल बंद है। स्वामिनारायण मंदिर में स्वामीजी के निवास को स्थगित कर दिया गया है। स्वामीजी के स्वास्थ्य को केंद्र मे रखते हुए उनके आसपास के प्रातः पूजा से वर्तमान में होनेवाले सभी सार्वजनिक सत्संग कार्यक्रमों को स्थगित कर दिया गया है।

देश-विदेश में नवनिर्मित बी.ए.पी.एस स्वामिनारायण मंदिरों में स्थापित होनेवाली मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा पूजन करते हुए पूज्यनीय स्वामीजी...

मंदिर भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है।

मंदिर भगवान के प्रति आस्था का केंद्र है। परम धाम समान एक ऐसा मंदिर है जो मन को शांति देता है। मंदिर वह पाठशाला है जो चरित्र का निर्माण करती है।

देश-विदेश में लगभग 1100 बी.ए.पी.एस आधुनिक युग में सही दिशा दे रहे हैं। मंदिरों का निर्माण कर ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामीजी महाराज ने आध्यात्मिक जगत में एक नई क्रांति लाई है। उनके द्वारा बनाए गए इन मंदिरों ने कई लोगों को सही दिशा में निर्देशित किया है। बी.ए.पी.एस के इन मंदिरों में होनेवाली साप्ताहिक सत्संग सभाओं से युवा और वृद्ध सभी का जीवन नया हो गया है। यहां हर कोई भगवान से मिलने का आनंद लेता है।

ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामीजी महाराज के पद्चिन्हों पर चलते हुए परम पूज्य महंतस्वामीजी महाराज के आशीर्वाद और प्रेरणा से देश-विदेश में नूतन बी.ए.पी.एस मंदिरों की स्थापना हो रही है। हाल ही में, नवंबर और दिसंबर, 2021 के दौरान, परम पूज्य महंतस्वामीजी महाराज ने गोंडल और अटलादरा में नवनिर्मित बी.ए.पी.एस स्वामिनारायण ने मंदिरों में पूजनीय मूर्तियों की

औपचारिक रूप से प्राण प्रतिष्ठा करके आध्यात्मिकता के द्वार खोले। साथ ही निर्माणाधीन बी.ए.पी.एस स्वामिनारायण मंदिरों के खातमुहूर्त की शिलाओं की भी विधिपूर्वक पूजा की। देश-विदेश के सत्संग केंद्रों में प्रतिष्ठा के अवसर पर उपस्थित हरिभक्तों ने उपस्थित रहकर विधि में हिस्सा लिया।। स्वामीजी ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि नित्य मंदिर में दर्शन, कथा, सत्संग करने चाहिए।

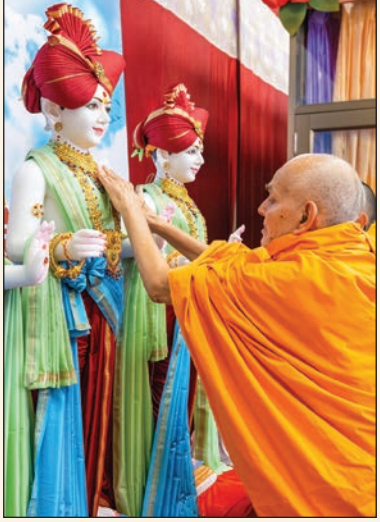

परम पूज्य महंतस्वामीजी महाराज द्वारा पूज्यनीय प्रतिमाओं को देश-विदेश में बी.ए.पी.एस स्वामिनारायण मंदिरों में विराजमान किया जाना है, उन नवनिर्मित मंदिरों की सूची यहां प्रस्तुत है:

मूर्ति प्रतिष्ठा (गोंडल में):

मालिया (हाटीना), माणावदर, प्रार्थना संस्कारधाम (मेहसाणा), अक्षरधाम संस्कारधाम (मेहसाणा), लीरा (युगांडा), भाणवड संस्कारधाम, गोराना (पुन: प्रतिष्ठा), वारण (भद्रा), जायवा (भादरा), प्रमुखवाटिका (राजकोट), तिरुपति राजकोट), सोरठियावाड़ी (राजकोट), श्रद्धापार्क (राजकोट), बांदरा (गोंडल), हरिपर (गोंडल), पिपलिया (पोशिना), हिंगटिया (पोशिना), चित्रोड़ी (पोशिना), गायत्रीनगर, न्यू गुरुकुल (गोंडल), मधुरम् संस्कारधाम (जूनागढ़)

ईंटों की पूजा (गोंडल में):

कैनबरा (ऑस्ट्रेलिया), दार-ए-सलाम (तंजानिया), उरण मोरा, धुवारण, कलमसर, वाल्वोड, गोरवा, गजाना, सुमुख (मेहसाणा), श्रीहरिपार्क (राजकोट), प्रमुखराज (राजकोट), चंदनपार्क (राजकोट), वानावड, जामखंभलिया, बेराजा, खाखरडा (संत आश्रम), मोटा दडवा (गोंडल), भोजराजपरा (गोंडल), खोडियारनगर (गोंडल), मोहनपार्क (गोंडल), संत कार्यलय (गोंडल), संतोकपुरा, कसुंबाड और रावपुरा (जारोला)।

मूर्तिप्रतिष्ठा (अटलादरा में):

ईसरामा (महेलाव) देवताज; कठोला, खजुरिया, प्रतापनगर, छोटाउदेपुर, बहादुरपुरा, लिंगस्थली, काशीपुरा, लुनादरा कॉलोनी और बोडेली क्षेत्र के अंबाली; अन्य क्षेत्रों में ऑस्ट्रेलिया में वाघोडिया, अंतोली, इटोला, पिपलिया, श्रद्धापार्क सोसाइटी - राजकोट (घनश्याम महाराज), राजूपुरा (चित्रप्रतिमा), ओस्ट्रेलिया में विक्टोरिया और क्वीन्सलैंड शामिल हैं।

ईंटों की पूजा (अटलादरा में):

कुंडल (बोडेली), गोधरा (निवास-भवन), हालोल (सभामंडप), बंटी फलिया (जंबुसर) और अंबामाता-वेरमाता (अटलादरा) के भूमिपूजन समारोह के पत्थरों की पूजा की।◆

सारंगपुर बी.ए.पी.एस. श्री यज्ञपुरुषदासजी गौशाला के अश्व और गीर गौवंश को भारत में पहला स्थान

परम पूज्य प्रमुखस्वामी महाराज से प्रेरित, सारंगपुर स्थित बी.ए.पी.एस श्री यज्ञपुरुषदासजी गौशाला भारतीय उच्च नस्ल के घोड़ों, गीर गायों, जाफराबादी भैंसों के प्रजनन के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है। समय-समय पर आयोजित होनेवाली कई प्रतियोगिताओं में यहां के पशुधन उच्च श्रेणी की भारतीय नस्ल के रूप में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हैं। हाल ही में सारंगखेड़ा, महाराष्ट्र में आयोजित सर्वश्रेष्ठ भारतीय अश्व प्रतियोगिता में सारंगपुर, बी.ए.पी.एस गौशाला का तीन वर्षीय काठियावाड़ी घोड़ा (बछड़ा) - मालव 'टू टीथ कोल्ट' प्रतियोगिता में पूरे भारत में प्रथम आया है। गौरतलब है कि मालव के पिता कन्हैया घोड़े को भी वर्ष 2018 में पूरे भारत में सर्वश्रेष्ठ काठियावाड़ी घोड़े की श्रेणी में पहला स्थान मिला था।

गौशाला को मिला नस्ल संरक्षण 2021 पुरस्कार

ICAR - National Bureau of animal Genetic Resources, राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, करनाल, हरियाणा के माध्यम से सारंगपुर बी.ए.पी.एस. संगठन की श्रीयज्ञपुरुषदासजी गौशाला को ओर्गेनाईजेशन स्तर पर नस्ल संरक्षण का प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। संस्थान को सारंगपुर में उच्च स्तरीय गीर गौवंश प्रजनन के लिए पुरस्कार प्रदान किया गया। इस गो संवर्धन कार्य में लगे सभी स्वयंसेवकों को बधाई...

दर्शन के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा संचालित संस्था भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद द्वारा पूज्य भद्रेशदास स्वामी को मिला सर्वोच्च लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड

26 दिसंबर, 2021 को महामहोपाध्याय पूज्य भद्रेशदास स्वामी को दिल्ली में भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद (आईसीपीआर) (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा देश भर के प्रख्यात विद्वानों और गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया।

महामहोपाध्याय पूज्य भद्रेशदास स्वामी ने ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज के कहने पर भगवान श्री स्वामिनारायण द्वारा प्रबोधित अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन का अनुसरण करते हुए, उपनिषदों, ब्रह्मसूत्रों और श्रीमद्भगवद् गीता पर भाष्य किए। साथ-साथ वादग्रंथ के द्वारा तत्वज्ञान के क्षेत्र में अमूल्य प्रदान किया है। सदियों बाद दर्शन के क्षेत्र में ऐसा हुआ है कि संपूर्ण प्रस्थानत्रयी पर भाष्यों के अतिरिक्त उन्हीं भाष्यकार द्वारा एक वादग्रंथ भी लिखा गया हो। इसके अलावा, परम पूज्य महंत स्वामी महाराज की आज्ञा से उन्होंने देश-विदेश में कई विश्वविद्यालयों, शोध संस्थानों और शैक्षिक परिसरों का दौरा किया, विद्वानों के साथ वैदिक दर्शन पर चर्चा की और दर्शन के क्षेत्र में नए योगदान दिए। इन्हीं बातों को दृष्टिगत रखते हुए भारत के शिक्षा मंत्रालय द्वारा संचालित आईसीपीआर संस्थान द्वारा दर्शनशास्त्र के क्षेत्र में सर्वोच्च सम्मान महामहोपाध्याय पूज्य भद्रेशदास स्वामी को प्रदान किया गया।

यह आयोजन आईसीपीआर द्वारा आयोजित अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन के विभिन्न आयामों पर तीन दिवसीय संगोष्ठी के समापन के अवसर पर आयोजित किया गया था।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रसिद्ध नेता, लेखक और विचारक डॉ. श्री राम माधव (पूर्व राष्ट्रीय सचिव, भाजपा) उपस्थित थे। इसके अलावा प्रो. आर. सी. सिन्हा (अध्यक्ष, आईसीपीआर), प्रो. जटाशंकर तिवारी (अध्यक्ष, अखिल भारतीय दर्शन परिषद), पद्मश्री चमुकृष्ण शास्त्री (सह-संस्थापक, संस्कृत भारती और अध्यक्ष, प्रांतीय भाषा संरक्षण समिति), श्री मुरलीधर शर्मा (कुलपति, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति), प्रो. सच्चिदानंद मिश्रा (आईसीपीआर के सदस्य सचिव), प्रो. श्री रामकिशोर त्रिपाठी (काशी के एक प्रकांड वेदांती) के साथ-साथ बी.ए.पी.एस सहित पूरे भारत में दस से अधिक विश्वविद्यालयों के पूर्व छात्र विद्वान, बी.ए.पी.एस संस्थान के विद्वान षड्दर्शनाचार्य पूज्य श्रुतिप्रकाशदास स्वामी भी उपस्थित थे। इस अवसर पर कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री श्रीनिवास वरखेड़ी जी ने वीडियो संदेश के माध्यम से भद्रेशदास स्वामी को बधाई संदेश भेजा।

इस अवसर पर उपस्थित विभिन्न विद्वानों ने अक्षर-पुरुषोत्तम दर्शन की शास्त्रीय प्रामाणिकता और महामहोपाध्याय पूज्य भद्रेशदास स्वामी के साथ-साथ बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण संस्थान के कार्यों और ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज की दिव्यता के बारे में अपने अनुभव प्रस्तुत किए।

आईसीपीआर को बधाई देते हुए, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति के कुलाधिपति, श्री मुरलीधर शर्मा, जो समारोह में उपस्थित थे, ने अपनी राय देते हुए कहा, 'मैं भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद को अभिनंदन देता हूं कि उन्होंने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए योग्य विद्वान की पसंदगी की है।' प्रस्थानत्रयी पर टिप्पणी देते हुए कहा कि इतनी सरल और शास्त्रीय भाषा में भाष्य लिखे गए हैं, जो असामान्य है। इन भाष्यों में कोई खंडन नहीं है। पूज्य भद्रेशदास स्वामी एक अभिनव भाष्यकार हैं। अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन की वैदिक प्रकृति के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा कि एक पूर्ण वैदिक अभिनव दर्शन है।

इस अवसर पर कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत

आईसीपीआर द्वारा आयोजित समारोह के मंच पर प्रख्यात भारतीय दार्शनिक विद्वानों के साथ भद्रेशदास स्वामी और श्रुतिप्रकाशदास स्वामी

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. श्री श्रीनिवास वरखेड़ीजी ने वीडियो संदेश के माध्यम से अपनी राय व्यक्त करते हुए कहा कि यह एक विद्वान, एक भाष्यकार का सम्मान है। प्रस्थानत्रयी पर स्वामिनारायण भाष्य की रचना के साथ, पूज्य भद्रेशदास स्वामी ने शास्त्रीय शब्दावली की एक प्रणाली में विद्वानों के समक्ष अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन प्रस्तुत किया है। आज उस विजन को लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड के जरिए राष्ट्रीय समर्थन मिला है।

अखिल भारतीय दर्शन परिषद के अध्यक्ष प्रो. जटाशंकर तिवारीजी ने आज के समारोह का महत्व बताते हुए कहा कि पूज्य भद्रेशदास स्वामी ने उन महापुरुषों की परंपरा में एक नई कड़ी जोड़ दी है। यह अकल्पनीय है कि प्रस्थानत्रयी पर एक भाष्य की रचना में उन्होंने कितना प्रयास किया होगा! जबकि किसी भाष्य के एक भाग का अध्ययन करने में पूरा जीवन व्यतीत हो जाए। यह दार्शनिक विद्वानों के सम्मान के योग्य है।

अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए, संस्कृतभारती संस्था के सह-संस्थापक और प्रांतीय भाषा संरक्षण समिति के अध्यक्ष पद्मश्री चमुकृष्ण शास्त्री ने कहा कि उनका मार्गदर्शन प्राप्त करना और उनके समय में उपस्थित होना हमारे लिए बहुत सौभाग्य की बात है।

आईसीपीआर के सदस्य सचिव प्रो. सच्चिदानंद मिश्रा ने उक्त पुरस्कार लाइफटाइम अचीवमेंट का उद्देश्य बताते हुए प्रशंसा पत्र पढ़कर कहा कि आपको तो कोई ज़रूरत नहीं है, लेकिन यह आपकी नि:स्वार्थ आजीवन सेवा का सम्मान करने का एक विनम्र प्रयास है जिसने भारतीय दर्शन को समृद्ध किया है... आईसीपीआर को गर्व है हमारे समय के जीवित कमेंटेटर महानाचार्य को लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड प्रदान करते हैं...! पढ़ने के बाद, आईसीपीआर के अध्यक्ष प्रो. आर. सी. सिन्हा और आईसीपीआर के सदस्य सचिव प्रो. सच्चिदानंद मिश्रा ने महामहोपाध्याय पूज्य भद्रेशदास स्वामी को यह लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड प्रदान किया, जिसे पूज्य भद्रेशदास स्वामी ने अक्षरपुरुषोत्तम महाराज के चरणों में समर्पित किया। उपस्थित सभी सदस्यों ने भी खड़े होकर पूज्य भद्रेशदास स्वामी को बधाई दी और तालियों की गड़गड़ाहट के साथ इस ऐतिहासिक क्षण की सराहना की।

तब पूज्य भद्रेशदास स्वामी ने कहा, 'मैं तो एक नटखट बच्चा था, जिसे पढ़ाई में कोई दिलचस्पी नहीं थी। लेकिन ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज ने उन्हें प्यार से स्वीकार किया, उन्हें अपनी पढ़ाई में प्रेरित किया, उन्हें कदम से कदम मिलाकर मार्गदर्शन किया, उनकी देखभाल की और ईमानदारी से शास्त्रों के अध्ययन में शामिल हुए। तो यहां जो प्रशंसा की गई है, वह उस शरारती बच्चे की नहीं, बल्कि संत ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज की है, जिन्होंने इसे बनाया है। आज का सम्मान ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज का सम्मान है, प्रगट गुरुहरि परम पूज्य महंत स्वामी महाराज का सम्मान है।' उन्होंने आगे कहा कि 'तो यह सम्मान भगवान स्वामिनारायण का है। यदि ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज ने मुझे भाष्य लिखने की आज्ञा न दी होती तो क्या भाष्य लिखा होता? तो यह सम्मान ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज का है और अब भी सबकुछ हमारे गुरु परम पूज्य महंत स्वामी महाराज की प्रेरणा से किया जाता है। इसलिए, यह सम्मान परम पूज्य महंत स्वामी महाराज का है।' उन्होंने यह कहकर निष्कर्ष निकाला, सद्गुरु मुक्तानन्द स्वामी के अनुसार, तन की उपाधि तजे सोई साधु, मैं आज प्रार्थना करता हूं कि मुझे

ऐसे साधु का पुरस्कार इसी जीवन में मिले।

आज के समारोह के मुख्य अतिथि प्रसिद्ध नेता, लेखक और विचारक डॉ. श्री राममाधवजी ने कहा कि स्वामिनारायण संप्रदाय ने इस देश की महान संस्कृति, परंपरा और सभ्यता की महानता के संदेश को फैलाने में बहुत बड़ा योगदान दिया है। स्वामिनारायण संप्रदाय एक बहुत बड़ा भक्ति संप्रदाय है, जिसके माध्यम से देश की धार्मिक परंपरा आगे बढ़ती रही है। आज जब विज्ञान की प्रगति के साथ-साथ ज्ञान की आवश्यकता है तो पूज्य भद्रेशदास स्वामी ने ज्ञान की उसी परंपरा को आगे बढ़ाया है।

आईसीपीआर के अध्यक्ष और सभाध्यक्ष प्रो. आर.सी. सिन्हा ने कहा कि भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद और अखिल भारतीय दार्शनिक परिषद को संतों का आशीर्वाद मिलता रहा है। हालांकि इस पुरस्कार का संत के लिए कोई महत्व नहीं है, आईसीपीआर को यह पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया है, इसकी गरिमा में वृद्धि हुई है। इस बैठक को देखकर लगता है कि आईसीपीआर को आशीर्वाद मिला है।

तत्पश्चात् श्री ज्योतीन्द्रभाई दवे ने परम पूज्य महंत स्वामी महाराज द्वारा इस अवसर पर भेजे गए आशीर्वाद का पाठ किया, जिसमें परम पूज्य महंत स्वामी महाराज ने लिखा था कि दर्शन के क्षेत्र में ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज के आशीर्वाद से भद्रेशदास स्वामी ने स्वामिनारायण भाष्य, स्वामिनारायण सिद्धांत सुधा जैसे कई शास्त्रों की रचना की है, इसलिए यह सम्मान न केवल भद्रेशदास स्वामी का है, बल्कि ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज की शताब्दी के अवसर पर उनका भी है...।

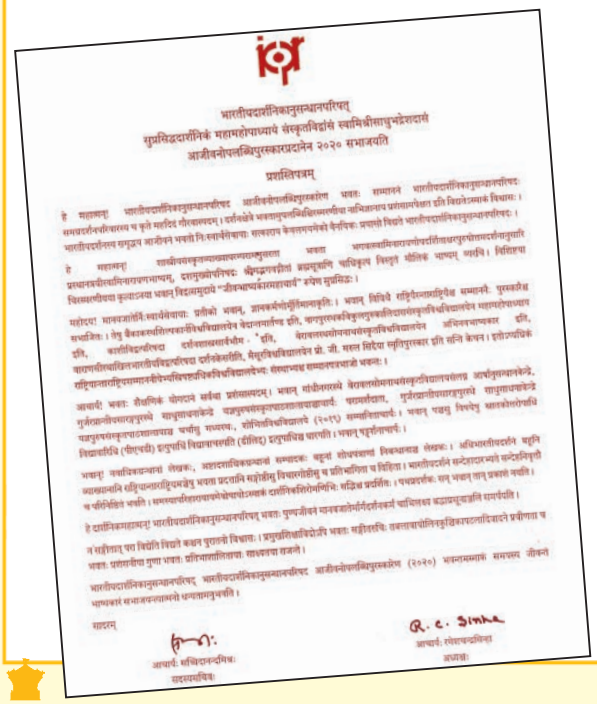

भारतीयदार्शनिकानुसन्धानपरिषत्
सुप्रसिद्धदार्शनिकं महामहोपाध्यायं संस्कृतविद्वांसं स्वामिश्रीसाधुभद्रेशदासं
आजीवनोपलब्धिपुरस्कारप्रदानेन २०२० सभाजयति

प्रशस्तिपत्रम्

हे महानन्द! भारतीयदार्शनिकानुसन्धानपरिषद् आजीवनोपलब्धिपुरस्कारेण भवतः सम्मानने भारतीयदार्शनिकानुसन्धानपरिषदः समग्रदर्शनपरिवारस्य च कृते महतीं गौरवानुभूतिं। दर्शनक्षेत्रे भवतामुपलब्धिविशिष्टमर्णयित्वा नाभिमानस्य प्रशंसामपेक्षा इति विद्वांसमार्क विचारः। भारतीयदर्शनस्य समृद्धस्य आजीवनं भवतां निःस्वार्थसेवायाः राजस्थान केवलमपसेवो वैदिकः प्रयासो विद्वते भारतीयदार्शनिकानुसन्धानपरिषदः।

हे महानन्द! शास्त्रीयवचनानुसन्धानमनन्यमनुसरता भवता भगवत्स्वामिनारायणोपदर्शितोत्तमपुरुषोत्तमदर्शनानुसारि प्रस्थानत्रयीतात्पर्यनिरायणभाष्यम्, दशमुखोपनिषदः श्रीमद्भगवद्गीतां ब्रह्मसूत्राणि चधिकृत्य विस्तृतं सैद्धांतिकं भाष्यम् सप्तर्षि। विशिष्टाया विस्मरणीयया कृपाऽऽशया भवता विद्यमानुयायं "श्रीमत्स्वामीनारायणाचार्य" रूपेण मुमुक्षिभिः।

महोदय! मानवजातेर्नि.स्वार्थसेवायाः प्रतीको भवान्, ज्ञानकर्मभक्तीर्मानवाकृतिः। भवान् विविधै सद्विद्यैनानाविधैश्च सम्मानैः पुरस्कारैश्च सम्पादितः। तेषु वैकल्पस्थितिभावाद्वैधभियाजनेन वेदान्तनार्तण्ड इति, वेदान्तस्वरूपोपनयनपरिचयाजनेन महामहोपाध्याय इति, कालिविद्वत्परिषत् दर्शनसमवार्यवीय - "इति, वेदान्तस्वरूपोपनयनपरिचयाजनेन अभिनवभाष्यकार इति, वाराणसीस्थितिभारतीयविद्वत्परिषत् दर्शनकेसरीति, सेतुरिचविद्यालयेन प्रो. जी. मरल विदेय सुतिपुरस्कार इति सनि केवल। इतोऽप्यधिके सद्विद्यानाद्विद्यमानकीर्त्यस्थितपरिचयिविद्यालयेभ्यः सेवाभाव सम्मानपत्राणि भवतः।

आचार्य! भवतः शैक्षणिकं योगदानं सर्वत्र प्रशंसास्पदम्। भवान् गांधीनगरस्थे वेदान्तसोमनाथसंस्कृतविद्यालयस्य आचार्यस्थानमलंकरोति, गुजरातीयसरपुरुषे साधुसाधनाकेन्द्रे पञ्चपुरुषसंस्कृताध्यापनाध्यापकाचार्यः परमर्षाद्या, गुजरातीयसरपुरुषे साधुसाधनाकेन्द्रे पञ्चपुरुषसंस्कृताध्यापनाध्यापकाचार्यः, शोधिनिरीक्षितानि (२००१) सम्पादितानि। भवान् पञ्चसु विश्वेषु भाषाकोशेषु च विद्याधिपति (पीएचडी) इत्युपधि विद्यायापरीति (डीलिट्) इत्युपधिञ्च धारणी। भवान् धुरीणगायनः।

भवान् नवाधिकग्रन्थानां लेखकः, महादार्शनिकग्रन्थानां सम्पादकः बहूनां सोधपत्राणां निबन्धानाञ्च लेखकः। अधिभारतीयदर्शने बहूनि व्याख्यानानि सद्विद्यानाद्विद्यमकेषु भवता प्रदत्तानि सहोदरीषु विचारगोष्ठीषु च प्रतिभाजितानि च भारतीयदर्शने सन्देशप्रसिद्धौ च परिचितिं भवति। समग्रभारतीयदार्शनकेषोपपोत्सवार्क दार्शनिकसिरोमणिरिति। सद्विज्ञ प्रदर्शितः। पथप्रदर्शकः सन् भवान् तान् प्रकाशे नयति।

हे दार्शनिकमहात्मन्! भारतीयदार्शनिकानुसन्धानपरिषत् भवतः पुण्यजीवने मानवकल्याणार्थं दर्शनकर्मे चाचिलस्य बद्धाग्रमुद्धाजनि समर्पयति। न सहोदरा! पत्र विद्यते विद्वान् पुराणे विद्यातः। प्रशुपशिक्षिदीक्षितः भवतः सहोदरश्चि: राजस्थानदिनिकृविकाश्रमदानादिभाने प्रवीणता च भवतः प्रशंसनीया गुणा भवतः प्रतिभाशालिताया: साधकाया राजते।

भारतीयदार्शनिकानुसन्धानपरिषद् भारतीयदार्शनिकानुसन्धानपरिषद् आजीवनोपलब्धिपुरस्कारेण (२०२०) भवतमभाकं समग्रस्य जीवनं भाग्यकारं सम्मानकलाभेनो धन्यतामनुभवति।

साधरम्

R. C. Sinha

आचार्यः सचिवानन्दमिश्रः
महासचिवः

आचार्यः संसदाध्यक्षिका
अध्यक्षः

समारोह के अंत में, पूज्य श्रुतिप्रकाशदास स्वामी ने अपने समापन भाषण में, ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज के दर्शन का परिचय देते हुए भारतीय दार्शनिक परंपरा को इस तरह से सम्मानित करने के लिए आईसीपीआर को धन्यवाद दिया।

इस अवसर पर संस्कृत वाङ्मय वाधमाया के क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित भारतीय पत्रिका **व्यासश्री** द्वारा अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन पर एक विशेषांक भी प्रकाशित किया गया था। पत्रिका के प्रधान संपादक प्रो. श्री बुद्धेश्वर षड़गीजी ने कहा कि व्यासश्री आईएसएसएन मार्क्ड और यूजीसी रेफर की गई पत्रिका साल में दो बार संस्कृत और संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए प्रकाशित होती है। जिसका प्रत्येक अंक प्रथम पन्ने पर एक विद्वान की छवि के साथ उन्हें समर्पित है ताकि आनेवाली पीढ़ियां भी उनके योगदान को जान सकें। हम पूज्य भद्रेशदास स्वामी की छवि को पहले पन्ने पर भी रखना चाहते थे, लेकिन उन्होंने विनम्रता से मना कर दिया और हमें इस मुद्दे को हमारे इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण और गुरु ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज के चरणों में समर्पित करने के लिए कहा। **व्यासश्री** द्वारा प्रकाशित 19 अंकों में से यह पहला अंक है, जिसमें किसी विद्वान का चित्र मुखपृष्ठ पर नहीं है। इस अंक में अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन पर विद्वानों द्वारा प्रस्तुत एक शोध पत्र पर महीनों चर्चा की जा सकती है और एक शोध प्रबंध लिखा जा सकता है।

इस अवसर पर काशी के प्रख्यात विद्वान प्रो. रामकिशोर त्रिपाठी जी के बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण अनुसंधान संस्थान द्वारा उनका स्वागत वेदांत-मार्तंड की उपाधि से किया गया। समर्थक रामकिशोर त्रिपाठी जी की विद्वत्ता का परिचय देते हुए पूज्य भद्रेशदास स्वामी ने कहा कि विद्वान सम्मान की उम्मीद नहीं करते, लेकिन शिक्षा सम्मान को आकर्षित करती है। समर्थक रामकिशोर त्रिपाठी जी महान विद्वान हैं, वेदांत विभूति हैं। उन्होंने नौ से अधिक वेदांत दर्शन का अध्ययन किया है। उनकी छात्रवृत्ति का स्वागत करते हुए, बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण अनुसंधान संस्थान ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज को उनकी जन्म शताब्दी के अवसर पर वेदांत-मार्तंड की उपाधि से सम्मानित करता है।

दिल्ली में आयोजित इस कार्यक्रम को देश-विदेश में भी कई लोगों ने वेबकास्ट के जरिए देखा। इस प्रकार, वैदिक सनातन धर्म के क्षेत्र में और दार्शनिक रूप से स्वामिनारायण संप्रदाय का एक ऐतिहासिक समारोह संपन्न हुआ। ◆

वैदिक सनातन हिंदू परंपरा के महान धर्माचार्यों के साथ श्रीअक्षरपुरुषोत्तम दर्शन के बारे में संवाद

परब्रह्म भगवान श्रीस्वामिनारायण प्रबोधित अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन एक स्वतंत्र मूल और विशुद्ध वैदिक दर्शन है, यह जानने के बाद भारत और विदेशों में विद्वानों के बीच इस दर्शन के लिए उत्सुकता और सम्मान बढ़ रहा है।

भारत के विभिन्न संप्रदायों के मूर्धन्य पंडितों के साथ शास्त्रीय तरीके से इस दर्शन पर कई गहन सेमिनार हुए हैं। प्रस्थानत्रयी यानि उपनिषद, ब्रह्मसूत्र और भगवद् गीता जैसे वैदिक शास्त्रों, वचनामृत जैसे स्वामिनारायण भगवान के उपदेश ग्रंथ और प्रस्थानत्रयी पर लिखे गए स्वामिनारायण भाष्य आदि शास्त्रों के प्रमाणों के साथ ये संगोष्ठियां हुईं। अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन की विशेषताओं, इसकी वैदिकता और विशिष्टता को जानकर सभी विद्वान बहुत खुश हुए, उन्होंने इस मूल दर्शन का स्वागत किया और इसका स्पष्ट समर्थन भी किया।

भारत के पारंपरिक विद्वानों ने बी.ए.पी.एस के संस्थान के विद्वान संत प्रस्थानत्रयी के भाष्यकार महामहोपाध्याय भद्रेशदास स्वामी विभिन्न संप्रदायों के पीठ स्थानों पर जाकर वहां धर्माचार्यों के साथ दार्शनिक सेमिनार आयोजित करें ऐसी इच्छा व्यक्त की। इसलिए उस संप्रदाय के विद्वानों की तरह परब्रह्म स्वामिनारायण द्वारा प्रचारित इस अक्षर-पुरुषोत्तम दर्शन पर वैदिक सनातन परंपरा के महान धर्माचार्यों के साथ संगोष्ठियां भी हुईं। इसके एक भाग के रूप में, अक्टूबर 2021 में, परम पूज्य महंत स्वामी महाराज के आदेश से, महामहोपाध्याय भद्रेशदास स्वामी ने कुछ प्राचीन पीठ स्थानों का दौरा किया और वे उस संप्रदाय के धर्माचार्यों से मिले। अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन के बारे में सौहार्दपूर्ण संवाद भी किया।

मध्व संप्रदाय के पीठाधीश्वर धर्माचार्य के साथ संवाद

इस यात्रा के तहत 25 अक्टूबर, 2021 को, उन्होंने कर्नाटक के उडुपी में प्रसिद्ध श्रीकृष्ण मठ में आदरणीय विश्वप्रियतीर्थ स्वामीजी से मुलाकात की। मध्वाचार्यजी द्वारा स्थापित आठ मठों में से यह मठ अदमारू मठ के नाम से प्रसिद्ध है। अक्षरपुरुषोत्तम महाराज और स्वामिनारायण भाष्यकार भद्रेशदास स्वामी का इस मठ के अर्चकों और विद्वानों ने स्वागत किया। ठाकोरजी और संतों को माला पहनाकर वे पूर्णकुंभ से वेदोक्त मंत्रों का उच्चारण करते हुए मंदिर तक ले गए। इस स्थान पर मठ के पर्याय पीठाधीश्वर धर्माचार्य पूज्य ईशप्रियतीर्थ स्वामीजी ने देवदर्शन कराए और उनका स्वागत किया। यहां पीठाधीश्वर पूज्य स्वामीजी और पंडितों की उपस्थिति में पूज्य भद्रेशदास स्वामी ने संपूर्ण प्रस्थानत्रयी स्वामिनारायणभाष्य भगवान की मूर्ति को अर्पित किया।

सबसे पहले इस मठ के वरिष्ठ महंत श्री पूज्य श्री विश्वप्रियतीर्थ स्वामीजी से मुलाकात हुई। न्याय, व्याकरण और वेदांत जैसे शास्त्रीय विषयों में उनकी महारत विद्वत्जगत में प्रसिद्ध है। वे संतों के स्वागत के लिए मठ के द्वार पर आए। उनके साथ मध्वाचार्यजी द्वारा स्थापित द्वैत दर्शन और भगवान स्वामिनारायण द्वारा स्थापित अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन के बारे में शास्त्रों के आधार पर लंबी चर्चा हुई। प्रस्थानात्रयी पर लिखे गए स्वामिनारायण भाष्य के संग्रह को देखकर पूज्य स्वामीजी बहुत संतुष्ट हुए और उन्होंने भगवान स्वामिनारायण के इस विशेष दर्शन का सहर्ष समर्थन किया। साथ ही उन्होंने कहा कि श्री प्रमुखस्वामी महाराज का यह एक महान कार्य है कि उन्होंने इन भाष्यों को तैयार कराया, जिनमें स्वामिनारायण भगवान का प्रमुख विशेष सिद्धांत का सुचारू रूप से प्रतिपादन हुआ है। बहुत दूरदर्शिता रखनेवाले को ही इस तरह के विचार के आ सकते हैं। इस सिद्धांत की शास्त्रीयता के बारे में कोई संदेह नहीं है।

पूज्य विश्वप्रियतीर्थ स्वामीजी ने पीठाधीश्वर आचार्य के रूप में उनके स्थान पर पूज्य ईशप्रियतीर्थ स्वामीजी को स्थापित किया है। पूज्य ईशप्रियतीर्थ स्वामीजी वैदिक सनातन शास्त्रों के भी बड़े विद्वान हैं। उनके साथ उनके आसन पर अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन के बारे में भी बहुत व्यापक दार्शनिक चर्चा हुई। विचार-विमर्श के दौरान मध्व संप्रदाय के मुर्धन्य पंडित भी मौजूद थे। अद्वैत, विशिष्टाद्वैत और द्वैत आदि जैसे अन्य दर्शनों की तरह तत्वज्ञान के क्षेत्र में स्वामिनारायण दर्शन का अग्रणी स्थान कैसे है, इस पर एक सुंदर संगोष्ठी हुई। जहां आवश्यक हो, पूज्य ईशप्रियतीर्थ स्वामीजी और पंडितों ने प्रश्न पूछे, जिनका भद्रेशदास स्वामी ने वचनामृत आदि संप्रदायिक शास्त्रों और उपनिषदों के संदर्भों के माध्यम से मानक उत्तर देकर उनकी जिज्ञासा को संतुष्ट किया।

इस संगोष्ठी के बाद मध्वपीठधीश्वर पूज्य ईशप्रियतीर्थ

स्वामीजी ने भी एक विशेष जनसभा का आयोजन किया। उनकी इच्छा थी कि भगवान स्वामिनारायण द्वारा प्रस्थापित अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन का स्वामिनारायण भाष्य को एक बड़ी सभा में पेश किया जाए। इस सभा में स्वयं पूज्य पीठाधीश्वर स्वामीजी ने आज के आयोजन की रिपोर्ट सभी सदस्यों को दी।

बाद में, पूज्य भद्रेशदास स्वामी ने अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन का संक्षिप्त परिचय दिया और स्वामिनारायण संप्रदाय और मध्व संप्रदाय के बीच प्रेमपूर्ण सम्बंध और प्रमुखस्वामी महाराज और महंत स्वामी महाराज के मध्व संप्रदाय के आचार्यों के साथ सम्मान और स्नेह को याद किया। सभा के अंत में भाष्यकार पूज्य भद्रेशदास स्वामी ने पूज्य ईशप्रियतीर्थ स्वामीजी को स्वामिनारायण भाष्य अर्पण किए। इस संगोष्ठी के बाद पूज्य पीठाधीश्वर ईशप्रियतीर्थ स्वामीजी ने अपने हस्ताक्षर से एक पत्र लिखकर इस ऐतिहासिक अवसर पर प्रसन्नता व्यक्त की।

इसी प्रकार मध्व पंथ के प्रसिद्ध पेजावर मठ के शोध संस्थान में अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन की मौलिकता के विषय में मध्व वेदांत के विशेषज्ञ विद्वानों से सुन्दर संवाद हुआ।

शारदा पीठ शृंगेरी के शंकराचार्य श्री विधुशेखरभारती स्वामीजी के साथ दार्शनिक संगोष्ठी

शृंगेरी स्थित शारदा मठ आदि शंकराचार्यजी द्वारा 8वीं शताब्दी में स्थापित किया गया था, जिसमें वर्तमान में श्री श्री विधुशेखरभारती तीर्थ स्वामीजी जगद्गुरु शंकराचार्य के पद पर आसीन हैं। शारदा पीठ में सदियों से वैदिक सनातन धर्म ग्रंथों का अध्ययन और शिक्षण सुचारू रूप से चल रहा है। यह पीठ विभिन्न शास्त्रों के विशेषज्ञ विद्वानों की खान के समान है। मठाधीश्वर पूज्य श्रीविधुशेखरभारती स्वामीजी स्वयं साधुता के साथ शास्त्रों के विशेषज्ञ हैं। षड्दर्शन के महान पंडित हैं। वह न्याय-व्याकरण-वेदांत और दर्शनशास्त्र में माहिर हैं। शारदा पीठ में नियमित रूप से शास्त्रार्थ आयोजित किए जाते हैं और स्वामीजी स्वयं शास्त्रार्थ के सूत्रों को अध्यक्ष के रूप में देखते हैं।

25 अक्टूबर, 2021 को सुबह 10:30 बजे जगद्गुरु श्री श्री विधुशेखरभारतीजी के साथ एक दार्शनिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का आयोजन गुरुनिवास के नाम

महान धर्माचार्यों के साथ दार्शनिक संवादों के साथ, पूज्य भद्रेशदास स्वामी, प्रतिष्ठित विद्वानों को संबोधित करते हुए, तिरुपति में राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के पहले स्नातक समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

से विख्यात पूज्य स्वामीजी के आसन पर किया गया। गुरुनिवास में प्रवेश करते ही पूज्य शंकराचार्यजी ने महामहोपाध्याय पूज्य भद्रेशदास स्वामी का हार्दिक स्वागत किया। पूज्य भद्रेशदास स्वामी ने पूज्य शंकराचार्यजी को दंडवतप्रणाम किया।

पूज्य श्रीविधुशेखरभारती स्वामीजी अच्छी तरह जानते थे कि भद्रेशदास स्वामी ने भगवान स्वामिनारायण के सिद्धांतों का पालन करते हुए प्रस्थानत्रयी भाष्यों की रचना की है। इसके अलावा, उन्हें तिरुपति राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय में आयोजित दस दिवसीय संगोष्ठी में दक्षिण भारत के मुर्धन्य विद्वानों के साथ अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन के बारे में हुई शास्त्र चर्चा पर पंडितों से एक रिपोर्ट भी मिली थी। इसलिए वे भी इस दर्शन के बारे में शास्त्रीय संवाद करने के लिए उत्सुक थे। औपचारिक स्वागत के बाद डेढ़ घंटे तक लगातार दार्शनिक चर्चा होती रही। पूज्य विधुशेखरभारती स्वामीजी ने इस चर्चा में बहुत रुचि ली और कई प्रश्न पूछे। चर्चा ब्रह्मसूत्र पर आधारित थी। दूसरे शब्दों में, ब्रह्मसूत्र में ब्रह्मज्ञान की तरह अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन कैसे होता है, इसकी व्याख्या है। ब्रह्मांड विज्ञान, आनुपातिकता, प्रमेय विज्ञान, साधन मीमांसा और फल सिद्धांत जैसे अति-शास्त्रीय विषयों पर गहन चर्चा हुई। इन विषयों में पूज्य शंकराचार्यजी अद्वैत दर्शन की मान्यताओं को प्रस्तुत करते थे और पूज्य भद्रेशदास स्वामी स्वामिनारायण भगवान द्वारा दिए गए निर्देश के आधार पर अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन के सिद्धांतों को प्रस्तुत करते थे। गंगा के प्रवाह की तरह शास्त्रीय संस्कृत भाषा में बहनेवाले इस दार्शनिक संवाद की गरिमा ने वहां मौजूद विद्वानों को प्रसन्न किया।

सौहार्दपूर्ण दार्शनिक संगोष्ठी के अंत में, पूज्य भद्रेशदास स्वामी ने पूज्य शंकराचार्यजी को प्रस्थानत्रयी स्वामिनारायण भाष्य का उपहार दिया। वे आनन्दित हुए कि जीवित भाष्यकार स्व-लिखित भाष्य अर्पण करते हैं। यद्यपि अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन के बारे में एक लंबी चर्चा हुई थी, फिर भी उन्होंने स्वामिनारायण भाष्य अपने हाथों में लिया और इसमें वर्णित विषयों और शैली में व्यक्त शास्त्रीयता की बहुत खुशी से सराहना की। ब्रह्मसूत्र स्वामिनारायण भाष्य के एक सूत्र का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि ये वास्तव में दार्शनिक भाष्य हैं क्योंकि भाष्यों में जो विशेषताएं मौजूद होनी चाहिए, वे इन भाष्यों में हैं। तत्पश्चात् पूज्य शंकराचार्यजी ने महामहोपाध्याय भद्रेशदास स्वामी को शाल ओढ़ाकर उनका सम्मान किया। उन्होंने साथ आए संतो का भी अभिनंदन किया। अपने पंथ का साहित्य प्रस्तुत किया और अंत में भद्रेशदास स्वामी से प्रेमपूर्वक आग्रह किया कि वे बार-बार हमारे पास आएं और यहां की शास्त्रीय चर्चा में हमें अपना लाभ दें।

संगोष्ठी के अंत में उपस्थित शारदापीठ के मूर्धन्य विद्वान ने कहा, 'हम समझते थे कि स्वामिनारायण संप्रदाय का कोई प्रमुख सिद्धांत नहीं है, यह अन्य दर्शनशास्त्र की एक शाखा है। लेकिन आज यह जानकर बहुत आश्चर्य और खुशी होती है कि अद्वैत, विशिष्टाद्वैत और द्वैत आदि जैसे अन्य दर्शनों की तरह इस संप्रदाय का भी अपना विशेष दर्शन है, जिसे अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन कहा जाता है। यह देखकर कि पुरुषोत्तम स्वामिनारायण भगवान के वचनामृत में दो तत्वों अक्षरब्रह्म और परब्रह्म का स्पष्ट निरूपण है। इससे पता चलता है कि यह दर्शन वास्तव में परब्रह्म स्वामिनारायण भगवान द्वारा प्रबोधित एक वैदिक दर्शन है।'

इस प्रकार वैदिक सनातन परंपरा के धर्माचार्यों से अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन के बारे में हुए शास्त्रीय संवाद से आपसी स्नेह और सम्मान में वृद्धि हुई। ◆

(पृष्ठ 24 का शेषांश)

सभी सत्संग का लाभ उठाएं। कोई व्यसन हो तो उससे मुक्त हो जाओ और सब हमारे सगराम जैसे भक्त बन जाओ। ऐसा कहकर स्वामीजी ने अद्‌भुत प्रेरणा दी।

स्वामीजी के आगमन और आशीर्वाद से, उन सभी के मैल धुल गए और पशु हिंसा समाप्त हो गई। इसके पीछे इस्तेमाल किया गया पैसा सबसे व्यवहार्य बन गया। सत्संग होने पर मोक्षभागी भी हुए।

इस तरह प्रमुखस्वामीजी महाराज ने दलितों को मित्रवत बनाया है और उनका हर तरह से उत्थान किया है।

उनके इस योगदान को देखकर जांजरका के महंत पूज्य बलदेवदासजी महाराज के शिष्य श्री त्रिभुवनदास ने 10-2-1994 को स्वामीजी से कहा कि, 'स्वामीजी! आपने युग परिवर्तन कर दिया। आप जैसे संत अब कब होंगे! आपके जैसा खुलापन और सादगी कहीं नहीं है। हरिजनों में आनेवाले आप अकेले हैं। आपने सभी को इतना प्यार दिया है कि हमारे लोग दौड़कर आपके पास आते हैं।'

स्वामीजी ने संस्कृति के शरीर से छुआछूत के संकट को किस हद तक मिटा दिया है, उसका यह कथन साक्षीदार है।

- साधु आदर्शजीवनदास ◆

बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण संस्था विभिन्न कार्यक्रमों के समाचार

वाइब्रेंट गुजरात एज्युकेशन समिट में आईपीडीसी

हाल ही में 5 और 6 जनवरी, 2022 को वाइब्रेंट गुजरात एज्युकेशन समिट-2022 साइंस सिटी, अहमदाबाद में आयोजित किया गया। सम्मेलन में देश-विदेश के कई शिक्षाविदों ने भाग लिया। सम्मेलन के साथ आयोजित शैक्षिक प्रदर्शनी में बी.ए.पी.एस. संस्थान द्वारा विकसित आईपीडीसी-एकीकृत व्यक्तित्व विकास पाठ्यक्रम को भी शामिल किया गया था। मूल्य-आधारित समग्र व्यक्तित्व विकास पर ध्यान देने के साथ बनाए गए इस पाठ्यक्रम की शुरूआत के बाद कई गणमान्य व्यक्तियों ने अपने विश्वविद्यालय में इस पाठ्यक्रम को शुरू करने के लिए अपनी उत्सुकता व्यक्त की।

एशिया-प्रशांत देशों में हुए यज्ञों का वाचन

ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी महोत्सव की पहल पर सर्वत्र भक्ति कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इसी कड़ी में 1 से 10 दिसंबर, 2021 को ने तक एशिया-प्रशांत देशों में यज्ञ-परायण प्रमुखस्वामी महाराज की जीवनी का विस्तार किया। इसके तत्वावधान में, एशिया-प्रशांत बी.ए.पी.एस सत्संग-केंद्रों की 2700 से अधिक युवा-वृद्ध-महिलाओं ने प्रमुखस्वामी महाराज की जीवनी के भाग-4 व भाग-5 का पाठ किया। इस प्रकार सभी भक्तों ने सामूहिक वाचन कर विशेष भक्ति प्रस्तुत की।

ब्रिस्बेन में श्रीनीलकंठवर्णी की प्रतिष्ठा

हाल ही में 14 दिसंबर, 2021 को ब्रिस्बेन, ऑस्ट्रेलिया में श्री नीलकंठवर्णी महाराज की एक प्रतिमा का अनावरण किया गया। बी.ए.पी.एस मंदिर ब्रिस्बेन में एक नया अभिषेक मंडप बनाया गया है। इसमें परम पूज्य महंत स्वामी महाराज के आशीर्वाद से 21 सितंबर, 2021 को पूज्य परमचिंतनदास स्वामी द्वारा नीलकंठवर्णी मूर्ति की स्थापना समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर कई परिवार ऑनलाइन माध्यम से घर बैठे और कुछ भक्तों ने मंदिर में प्रत्यक्ष उपस्थित रह कर इस अनुष्ठान का लाभ उठाया।

संस्कार एवं संस्कृति की ज्योति जगानेवाली पत्रिका **'स्वामिनारायण प्रकाश'** पढ़ें और पढ़ाएँ...

आपके परिवार में शील-संस्कार, चरित्र एवं सत्संग की ज्योति जगाती, जीवन में सुख-शांति का संदेश देती मासिकी पत्रिका 'स्वामिनारायण प्रकाश' खूब अल्प शुल्क में आपको नियमितरूप से प्राप्त होती है।

आज से ही सभ्यपद प्राप्त कर इससे अधिकाधिक लाभान्वित हों।

सदस्यता शुल्क : वार्षिक : रु. 60/-

द्विवार्षिक : रु. 110/- त्रिवार्षिक : रु. 170/-

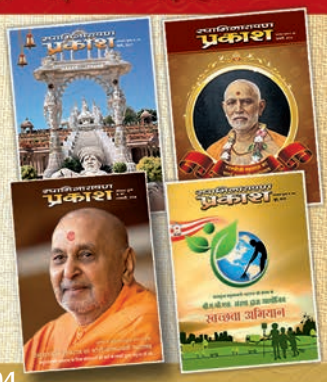

पता : सामयिक विभाग, स्वामिनारायण अक्षरपीठ, शाहीबाग, अहमदाबाद - 380004

अटलादरा-वडोदरा में बी.ए.पी.एस मंदिरों की मूर्तियों की प्रतिष्ठा पूजा में मग्न परम पूज्य महंत स्वामी महाराज...

अटलादरा में परम पूज्य महंत स्वामी महाराज की उपस्थिति में भक्ति कार्यक्रमों की एक शृंखला आयोजित की गई। उस शृंखला में स्वामीजी के आशीर्वाद से अनेक बी.ए.पी.एस. मंदिरों में स्थापित होनेवाले श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज तथा अन्य भगवद्रूपों का भी पूजन किया गया। इस अवसर पर स्वामीजी ने 24-12-2021 को वाघोड़िया एवं अंटोली एवं 12-1-2022 को ऑस्ट्रेलिया में क्वींसलैंड और विक्टोरिया बी.ए.पी.एस. मंदिर में स्थापित की जानेवाली मूर्तियों की प्रतिष्ठा-पूजा की। इसके अलावा 19 अन्य शहरों के नवनिर्मित बी.ए.पी.एस मंदिरों की प्रतिष्ठा पूजन विधि स्वामीजी के हाथों अटलादरा में की गई थी। उन दिव्य अवसरों की यादें...।

Swaminarayan Prakash Hindi, February-2022, Published on 10-02-2022, Printed & Posted at Ahmedabad, P.S.O. 10th on Every Month.
Regd No. GAMC-719/2021-2023, Valid up to 31-12-2023. RNI No. 43538/85.
Licensed to Post Without Perpayment No. PMG/NG/029/2021-2023, Valid up to 31-12-2023.

अमेरिका के रॉबिंसविले में बर्फबारी के बीच तपोमूर्ति श्रीनीलकंठवर्णी महाराज
और उनके दर्शन में मग्न भक्तों की एक यादगार छवि...

Printed and Published by Sadhu Swayamprakashdas on behalf of Swaminarayan Aksharpith and Printed at Swaminarayan Mudran Mandir, Shahibaug Road, Ahmedabad - 380 004 and Published from Swaminarayan Aksharpith, Shahibaug Road, Ahmedabad - 380 004. Editor - Sadhu Swayamprakashdas